ॐ

श्रीवीतरागाय नमः ।

श्रीमाघनंदियोगींद्रविरचित

शास्त्रसारसमुच्चय

भाषाटीकासहित ।

लेखक—

रसायनशास्त्री राजवैद्य
श्रीमान् पंडित शीतलप्रसादजी जैन, देहली
(वंश-परंपरागत राजवैद्य)

प्रकाशक—

बृहदायुर्वेदीय औषध-भंडार, जौहरीबाजार, देहली ।

वीरनिर्वाण संवत् २४५१

समर्पण

विद्वद्वर्य श्रीमान् पं० लालारामजी शास्त्रीकी सेवामें-

गुरुवर !

आज्ञासे आप हीं की ।
टीका यह स्वल्प सी की ॥
स्वीकार इसको कीजे ।
यह भावना है जी की ॥

भवदीय-

शीतलप्रसाद वैद्य,

कुछ वक्तव्य।

मुझे स्वाध्याय करनेकी बड़ी रुचि है। मैं प्रायः घंटे दो घंटे प्रति दिन स्वाध्याय करता हूं और इस प्रकार प्रायः ४० वर्षसे बराबर स्वाध्याय कर रहा हूं।

स्वाध्यायके साथ कुछ लिखनेकी भी अभिरुचि हो गई है। पहिले एक चर्चामंजरी नामकी छोटी सी पुस्तक लिखी थी जो कृपा कर मुफ्त बांट दी गई थी।

इसी प्रकार स्वाध्यायके समय ही एक नामावली नामका कोश भी लिखा है। इसमें एक वस्तुके नाम, दो दो वस्तुओंके नाम, इसप्रकार १४८ एक सौ अड़तालीस वस्तुओं तकके नाम लिखे गये हैं। कितनी ही संख्याओंकी नामावली तो ३०० तीन सौसे ऊपर निकल गई है।

इस कोशको प्रकाशित करनेकी बहुत दिनसे इच्छा थी परंतु ज्यों ज्यों दिन निकलते हैं और नवीन नवीन ग्रन्थोंका स्वाध्याय करनेमें आता है, त्यों त्यों यह कोश बढ़ता ही जाता है। इसी बढ़ाव चढ़ावमें इसके प्रकाशित होनेका कार्य अभी तक रुक रहा है।

थोड़े दिन पहिले मा० दि० जैन-ग्रन्थमालामें सिद्धांतसारादि संग्रह नामका एक गुच्छक प्रकाशित हुआ है। उसमें एक शास्त्र-सारसमुच्चय नामका छोटासा ग्रन्थ भी है जो कि एक प्रकारसे

नामावलीके ही समान है। उसे देख कर और विद्वद्वर पं० लालारामजी शास्त्रीके अनुरोध करने पर उसी विशाल कोशमेंसे सब सामग्री ले कर मैंने यह नामावली टीका लिख दी है। मेरी इच्छा थी कि इस नामावलीमें आए हुए नामोंका लक्षण भेद-प्रभेद आदि सब लिख दिये जाते, परंतु ऐसा करनेमें प्रथम तो देर बहुत लगती, दूसरे ग्रन्थ बहुत बड़ा हो जाता, तीसरे उपर्युक्त पंडितजी इसके प्रकाशित करनेकी जल्दी कर रहे थे। इन सब कारणोंसे इसका संक्षिप्त विवरण ही प्रकाशित किया जाता है। यदि पाठकोंको हमारा यह प्रयास पसंद आया और विद्यार्थियोंको तथा स्वाध्याय करनेवालोंको इससे कुछ लाभ पहुंचा, तो फिर इसकी बड़ी टीका (नामावलीके पूरे पूरे विवरण सहित) लिख कर पाठकोंकी सेवामें समर्पण की जायगी। साथमें उस विशाल कोशको प्रकाशित करनेकी भी योजना की जायगी।

अज्ञान और प्रमादवश त्रुटियां और अशुद्धियोंका रहना स्वाभाविक है। आशा है, पाठकगण इसके लिये मुझे क्षमा करेंगे।

—शीतलप्रसाद वैद्य

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः ।

श्रीमाघनंदिविरचितः

शास्त्रसारसमुच्चयः ।

श्रीमन्नम्रामरस्तोमं प्राप्तानंतचतुष्टयम् ।
नत्वा जिनाधिपं वक्ष्ये शास्त्रसारसमुच्चयम् ॥ १ ॥

दोहा ।

श्रीसुर समूह नमत जिन्हें, प्राप्तचतुष्टय चार ।
ता जिनेन्द्र प्रतिनत कहूं, शास्त्रसमुच्चयसार ॥ १ ॥

अथ त्रिविधः कालो द्विविधः षड्विधो वा ॥ १ ॥

अर्थ–कालद्रव्य तीन प्रकार, दो प्रकार, और छै प्रकार है। यथा–भूतकाल १ भविष्यतकाल २ वर्तमानकाल ३ (ऐसे काल ३ प्रकार) निश्चयकाल १ व्यवहारकाल २ तथा अवसर्पिणीकाल १ उत्सर्पिणीकाल २ (ऐसे काल २ प्रकार) सुखमासुखमा १ सुखमा २ सुखमादुखमा ३ दुखमासुखमा ४ दुखमा ५ दुखमादुखमा ६ (ऐसे काल ६ प्रकार) ॥ १ ॥

दशविधाः कल्पद्रुमाः ॥ २ ॥

अर्थ—कल्पवृक्ष दश प्रकारके होते हैं।

यथा—वादित्रांग १ पात्रांग २ भूषणांग ३ पानांग ४ भोजनांग ५ पुष्पांग ६ ज्योतिरांग ७ गृहांग ८ वस्त्रांग ९ और दीपांग १० ॥ २ ॥

चतुर्दशकुलंकरा इति ॥ ३ ॥

अर्थ—कुलकर चौदह हैं।

यथा—प्रतिसुत १ सन्मति २ क्षेमंकर ३ क्षेमन्धर ४ सीमंकर ५ सीमन्धर ६ विमलवाहन ७ चक्षुष्मान् ८ यशस्वी ९ अभिचन्द्र १० चन्द्राभ ११ मरुदेव १२ प्रसेनचन्द्र १३ नाभिनरेश १४ ॥ ३ ॥

षोडशभावनाः ॥ ४ ॥

अर्थ—भावनायें सोलह हैं।

यथा—दर्शनविशुद्धि १ विनयसम्पन्नता २ शीलंव्रतेष्वनतिचारः ३ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४ संवेग ५ शक्तितस्त्याग ६ तप ७ साधुसमाधि ८ वैय्यावृत्यकरण ९ अर्हन्तभक्ति १० आचार्यभक्ति ११ बहुश्रुतिभक्ति १२ प्रवचनभक्ति १३ आवश्यकापरिहान १४ मार्गप्रभावना १५ प्रवचनवात्सल्य १६ ॥ ४ ॥

चतुर्विंशति तीर्थंकराः ॥ ५ ॥

अर्थ—तीर्थंकर चौबीस हैं।

यथा-श्रीऋषभदेव १ श्रीअजितनाथ २ श्रीसम्भवनाथ ३ श्रीअभिनन्दननाथ ४ श्रीसुमतिनाथ ५ श्रीपद्मप्रभ ६ श्रीसुपार्श्वनाथ ७ श्रीचन्द्रप्रभ ८ श्रीपुष्पदन्त ९ श्रीशीतलनाथ १० श्रीश्रेयांसनाथ ११ श्रीवासुपूज्य १२ श्रीविमलनाथ १३ श्रीअनन्तनाथ १४ श्रीधर्मनाथ १५ श्रीशांतिनाथ १६ श्रीकुन्थुनाथ १७ श्रीअरहनाथ १८ श्रीमल्लिनाथ १९ श्रीमुनिसुव्रतनाथ २० श्रीनमिनाथ २१ श्रीनेमिनाथ २२ श्रीपार्श्वनाथ २३ श्रीवर्द्धमान २४ ॥ ५ ॥

चतुस्त्रिंशदतिशयाः ॥ ६ ॥

अर्थ-अरहन्तदेवके अतिशय चौंतीस होते हैं।

यथा-पसेवरहित शरीर १ मलमूत्ररहित शरीर २ रक्तक्षीर समान ३ आकृति शोभायमान ४ अतिरूपवान शरीर ५ सुगंधित शरीर ६ समचतुरस्रसंस्थान ७ एकहजार आठ लक्षणयुक्त शरीर ८ बल विशेष ९ मिष्ट वचन १० (यह दश अतिशय जन्मके हैं) शतयोजन सुभिक्ष १ आकाश गमन २ अहिंसा ३ उपसर्गरहित ४ आहाररहित ५ चतुर्मुख दर्शन ६ समस्त विद्यामें स्वामित्व ७ छायारहित शरीर ८ नेत्रोंके पलक लगैं नहीं ९ नख केश बढैं नहीं १० (यह दश अतिशय केवलज्ञानके हैं) सब भाषा मिश्रित मागधी भाषा १ सब जीवोंमें मित्रता २ छहों ऋतुके फलफूलोंका एक ही समयमें फलना ३ दर्पण समान पृथ्वी ४

सुगंधित वायु ५ सम्पूर्ण जीवोंको आनन्द ६ एक योजन तक भूमि शुद्ध ७ गन्धोदक वृष्टि ८ आकाश निर्मल ९ जय जय शब्द १० चरणोंतल कमलोंकी रचना ११ धर्मचक्र सन्मुख चले १२ वायुकुमार हवा करें १३ अष्टमंगल द्रव्य १४ (यह चौदह अतिशय देवकृत हैं) १०, १०, और १४ ऐसे ३४ ॥ ६ ॥

पंच महाकल्याणानि ॥ ७ ॥

अर्थ—अरहन्तोंके महाकल्याण पांच होते हैं।

यथा—गर्भकल्याण १ जन्मकल्याण २ तपकल्याण ३ ज्ञानकल्याण ४ मोक्षकल्याण ५ ॥ ७ ॥

घातिचतुष्टयम् ॥ ८ ॥

अर्थ—घातियाकर्म चार हैं।

यथा—ज्ञानवर्णीकर्म १ दर्शनावर्णकर्म २ मोहनीयकर्म ३ अन्तरायकर्म ४ ॥ ८ ॥

अष्टादशदोषाः ॥ ९ ॥

अर्थ—दोष अठारह हैं (जो अरहन्तोंके नहीं होते)।

यथा—क्षुधा १ तृषा २ जन्म ३ जरा ४ मरण ५ रोग ६ भय ७ मद ८ राग ९ द्वेष १० मोह ११ चिन्ता १२ रति १३ निद्रा १४ विस्मय १५ विषाद १६ खेद १७ स्वेद १८ ॥ ९ ॥

समवसरणेकादश भूमयः ॥ १० ॥

अर्थ-समवशरणमें ग्यारह भूमि होती हैं।

यथा-चैत्यभूमि १ खातिभूमि २ लताभूमि ३ उपवन-भूमि ४ ध्वजाभूमि ५ कल्पांगभूमि ६ गृहभूमि ७ सद्गण-भूमि ८ तथा तीन पीठिका, ऐसे भूमि ११ ॥ १० ॥

द्वादशगणाः ॥ ११ ॥

अर्थ-समवशरणमें बारह सभायें होती हैं।

यथा-पहली सभामें गणधरादि मुनिजन १ दूसरी सभामें कल्पवासी देवियां २ तीसरी सभामें आर्यिकाएं और मनुष्यनी ३ चौथी सभामें भवनवासिनी देवियां ४ पांचवीं सभामें व्यन्तरणी देवियां ५ छठी सभामें ज्योतिष्क देवियां ६ सातवीं सभामें अपने अपने इन्द्रोंके साथ कल्पवासी देव ७ आठवीं सभामें भवनवासी देव ८ नवमी सभामें व्यन्तर देव ९ दशवीं सभामें ज्योतिष्क देव १० ग्यारहवीं सभामें मनुष्य ११ बारहवीं सभामें पशु १२ ऐसे १२ सभा हैं।

अष्टमहाप्रातिहार्याणि ॥ १२ ॥

अर्थ-महाप्रातिहार्य आठ हैं।

यथा-अशोकवृक्ष १ पुष्पवृष्टि देवोंकृत २ दिव्यध्वनि ३ चामर ४ छत्र ५ सिंहासन ६ भामण्डल ७ दुन्दुभि शब्द ८।

अनन्तचतुष्टयम् इति ॥ १३ ॥

अर्थ-अनन्तचतुष्टय चार हैं।

यथा—अनन्तज्ञान १ अनन्तदर्शन २ अनन्तसुख ३ अनन्तवीर्य ४ ॥ १३ ॥

द्वादशचक्रवर्तिनः ॥ १४ ॥

अर्थ—चक्रवर्ती बारह हैं।

यथा—भरत महाराज १ सगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ शांतिजिनि ५ कुंथुजिन ६ अरहजिन ७ सुभूमि ८ पद्मनाभि ९ हरिषेण १० जयसेन ११ ब्रह्मदत्त १२ ॥ १४ ॥

सप्तांगानि ॥ १५ ॥

अर्थ—राज्यके (चक्रवर्तीके) अंग सात होते हैं।

यथा—स्वामी १ मन्त्री २ जनसमूह प्रजा ३ कोट ४ खजाना ५ मित्रगण ६ सेना ७ ॥ १५ ॥

चतुर्दश रत्नानि ॥ १६ ॥

अर्थ—चक्रवर्तीके चौदह रत्न होते हैं।

यथा—सेनापति १ गृहपति २ शिल्पकार ३ पुरोहित ४ स्त्री ५ हस्ति ६ अश्व ७ ये सात सजीव रत्न हैं। काकिनीमणि १ चक्ररत्न २ चूड़ामणि ३ चर्म ४ छत्र ५ खड्ग ६ दण्ड ७ ये सात अजीवरत्न हैं, ऐसे १४ ॥ १६ ॥

नव निधयः ॥ १७ ॥

अर्थ—चक्रवर्तीके निधियां नौ होती हैं।

यथा—कालनिधि १ महाकालनिधि २ माणवनिधि ३

पिंगलनिधि ४ नैसर्प्पनिधि ५ पद्मनिधि ६ पांडुकनिधि ७ शंखनिधि ८ नानारत्ननिधि ६।

दशांगभोगा इति ॥ १८ ॥

अर्थ—चक्रवर्तीके भोग उपभोग दश प्रकारके हैं।

यथा—रत्ननिधि १ सुंदर स्त्रियां २ नगर ३ आसन ४ शय्या ५ सैन्य ६ भोजन ७ पात्र ८ नाट्यशालाएं ९ वाहन १० ॥ १८ ॥

नवबलदेववासुदेवनारदाश्चेति ॥ १९ ॥

अर्थ—बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, नारद नौ नौ होते हैं।

यथा—विजय बलदेव १ अचल बलदेव २ धर्मप्रभ बलदेव ३ सुप्रभ बलदेव ४ सुदर्शन बलदेव ५ नन्द बलदेव ६ नन्दमित्र बलदेव ७ रामचन्द्र बलदेव ८ बलभद्र बलदेव ९ (ऐसे नौ बलदेव) त्रिपृष्ट वासुदेव १ द्विपृष्ट वासुदेव २ स्वयंभू वासुदेव ३ पुरुषोत्तम वासुदेव ४ पुरुषसिंह वासुदेव ५ पुरुषपुण्डरीक वासुदेव ६ पुरुषदत्त वसुदेव ७ लक्ष्मण वासुदेव ८ कृष्ण वासुदेव ९ (ऐसे नौ नारायण) अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव १ तारक प्रतिवासुदेव २ मेरुक प्रतिवासुदेव ३ निशुम्भ प्रतिवासुदेव ४ मधुकैटभ प्रतिवासुदेव ५ बलि प्रतिवासुदेव ६ प्रहरण प्रतिवासुदेव ७ रावण प्रतिवासुदेव ८ जरासंध प्रतिवासुदेव ९ (ऐसे प्रतिवासुदेव वा प्रतिनारायण नौ) भीमनारद १ महाभीम नारद २ रुद्रनारद ३

महारुद्र नारद ४ काल नारद ५ महाकाल नारद ६ दुर्मुख नारद ७ नरकमुख नारद ८ अधोमुख नारद ९ (ऐसे नौ नारद) ॥ १९ ॥

एकादश रुद्राः ॥ २० ॥

अर्थ—रुद्र ग्यारह होते हैं।

यथा-भीमबली रुद्र १ जितशत्रु रुद्र २ रुद्र रुद्र ३ विश्वानल (विशाजनयन) रुद्र ४ सुप्रतिष्ठ रुद्र ५ अचल रुद्र ६ पुंडरीक रुद्र ७ अजितन्धर रुद्र ८ जितनाभि रुद्र ९ पीठ रुद्र १० सात्यकी रुद्र ११ ॥ २० ॥

इति शास्त्रसारसमुच्चय भाषाटीकासह प्रथमोऽध्यायः।

अथ त्रिविधो लोकः ॥ १ ॥

अर्थ—लोक तीन प्रकार है।

यथा—ऊर्ध्वलोक १ मध्यलोक २ पाताल लोक ३।

सप्तनरकाः ॥ २ ॥

अर्थ-नरक सात हैं।

यथा—घर्मा १ वंशा २ मेघा ३ अंजना ४ अरिष्टा ५ मघवी ६ माघवी ७ ॥ २ ॥

एकोनपंचाशत्पटलानि ॥ ३ ॥

अर्थ—सातों नरकोंमें उनंचास पटल हैं।

यथा-पहले नरकमें १३ पटल, दूसरे नरकमें ११ पटल, तीसरे नरकमें ९ पटल, चौथे नरकमें ७ पटल, पांचवें नरकमें ५ पटल, छटे नरकमें ३ पटल, सातवें नरकमें १ पटल, इसप्रकार १३+११+९+७+५+३+१=४९ हुए।

इंद्रकाणि च ॥ ४ ॥

अर्थ-सातों नरकोंमें इन्द्रकबिले उनंचास हैं।

यथा-पहले नरकमें इन्द्रक बिले १३, दूसरे नरकमें ११ तीसरे नरकमें ९ चौथे नरकमें ७ पांचवें नरकमें ५ छठेमें ३ सातवें नरकमें १, ऐसे १३+११+९+७+५+३+१=४९।

चतुरुत्तरषटच्छतनवसहस्रं श्रेणिबद्धानि ॥ ५ ॥

अर्थ-सातों नरकोंमें श्रेणीबद्ध बिले नौ हजार छः सौ चार हैं।

यथा-प्रथम नरकमें श्रेणीबद्ध बिले ४४२० दूसरे नरकमें २६८४ तीसरे नरकमें १४७६, चौथे नरकमें ७००, पांचवें नरकमें २६० छठे नरकमें ६० और सातवें नरकमें ४ ऐसे ४४२०+२६८४+१४७६+७००+२६०+६०+४ = ९६०४ हुए ॥ ५ ॥

सप्तचत्वारिंशदुत्तरत्रिशताभ्यधिकनवतिसहस्रालंकृतत्र्यशीतिलक्षं बिलानि प्रकीर्णकानि ॥ ६ ॥

अर्थ-सातों नरकोंमें तिरासी लाख नब्बे हजार तीन सौ सैंतालीस प्रकीर्णक बिले हैं ॥ ६ ॥

यथा—प्रथम नरकमें प्रकीर्णक बिल २९,९५,५६७ दूजे नरकमें २४,९७,३०५ तीजे नरकमें १४,९८,५१५ चौथे नरकमें ९,९९२२३ पांचवें नरकमें २,९९,७३५ छठे नरकमें ९९,९७२ सातवें नरकमें नहीं है। इसप्रकार तिरासी ८३ लाख नब्बे ९० हजार तीन ३ सौ सैंतालीस ४७ प्रकीर्णक बिल हैं।

एवं चतुरशीतिलक्षबिलानि ॥ ७ ॥

अर्थ—इसप्रकार सातों नरकोंमें चौरासी लाख बिले हैं।

यथा—पहले नरकमें तीनों प्रकारके बिल ३०,००००० दूसरे नरकमें २५००००० तीसरे नरकमें १५००००० चौथे नरकमें १०,००००० पांचवें नरकमें ३०,०००० छठे नरकमें ९९९९५ सातवें नरकमें ५—ऐसे ८४००००० चौरासी लाख ॥ ७ ॥

चतुर्विधं दुःखमिति ॥ ८ ॥

अर्थ—सातों नरकोंमें चार प्रकारके दुःख हैं।

यथा—क्षेत्रजनित दुःख १ शरीरजनित दुःख २ मानसिक दुःख ३ असुरकुमार देवोंकृत दुःख ४ ॥ ८ ॥

जम्बूद्वीप लवणसमुद्रादयोऽसंख्यात-द्वीपसमुद्राः ॥ ९ ॥

अर्थ—मध्यलोकमें जंबूद्वीपादिक तो द्वीप और लवणोदधि आदि समुद्र ऐसे असंख्यात द्वीप और समुद्र हैं।

यथा—जम्बूद्वीप तो द्वीप और लवणोदधि समुद्र, धातकी-

खंड द्वीप और कालोदधि समुद्र, पुष्करवरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणीवरद्वीप वारुणीवर समुद्र, क्षीरवरद्वीप क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप घृतवर समुद्र, इक्षुवरद्वीप इक्षुवरसमुद्र, नन्दीश्वर द्वीप नन्दीश्वरसमुद्र, अरुणवरद्वीप अरुणवरसमुद्र, इसप्रकार द्वीपको समुद्र बेढे और समुद्रको द्वीप बेढे दूना २ विस्तार लिये मध्यलोकमें अंतके स्वयम्भूरमण समुद्र पर्यन्त अच्छे अच्छे नामवाले असंख्यात द्वीप समुद्र हैं ॥ ९ ॥

तत्रार्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रो मनुष्यक्षेत्रम् ॥ १० ॥

अर्थ–मध्यलोकमें ढाई द्वीप समुद्र तक मनुष्य क्षेत्र है।

यथा–पूरा तो जम्बूद्वीप और पूरा धातकी खण्ड-पूरा लवणोदधि समुद्र और पूरा कालोदधि समुद्र और आधा पुष्करद्वीप पर्यन्त मनुष्य क्षेत्र है ॥ १० ॥

षण्णवति कुभोगभूमयः ॥ ११ ॥

अर्थ–ढाई द्वीपमें कुभोगभूमियां छ्यानवे हैं।

यथा–लवण समुद्रके दोनों किनारोंपर २४-२४ कुभोगभूमियां हैं, इसीप्रकार कालोदधि समुद्रके दोनों किनारों पर २४-२४ कुभोगभूमियां हैं ऐसे ९६ ॥ ११ ॥

पंचमन्दर गिरयः ॥ १२ ॥

अर्थ–ढाई द्वीपमें मन्दर गिरि पांच हैं।

यथा–जम्बूद्वीपमें मन्दर (मेरु) गिरि १, धातकीखंडमें २ और पुष्करद्वीपमें २ इसतरह ५ ॥ १२ ॥

जम्बूवृक्षाः ॥ १३ ॥

अर्थ–

यथा–मेरु पर्वतकी ईशान विदिशामें उत्तरकुरु भोग-भूमिकेंविषैं अनादिनिधन पृथ्वीकायरूप अकृत्रिम मुख्य १ और १४०११९ परिवारके वृक्षोंसहित सब एक लाख चालीस हजार एकसौ बीस १,४०,१२०, जम्बूवृक्ष हैं।

शाल्मलयश्च ॥ १४ ॥

अर्थ–

यथा-मेरु पर्वतकी नैऋत विदिशामें देवकुरु भोगभूमिके क्षेत्रविषैं पृथ्वीकायरूप अनादि निधन अकृत्रिम जम्बूवृक्षके समान शाल्मली वृक्ष है ॥ १४ ॥

विंशतिर्यमकगिरयश्च ॥ १५ ॥

अर्थ—यमक गिरि बीस हैं।

यथा—सीता नदीके पूर्व तट पर 'चित्र' नामा एक यमकगिरि है, पश्चिम तट पर 'विचित्र' नामा एक यमकगिरि है सीतोदा नदीके पूर्व तट पर 'यमक' नामवाला एक यमकगिरि है और पश्चिम तट पर 'मेघ' नामवाला एक यमकगिरि है, इसप्रकार एक मेरु संबंधी चार यमकगिरि हैं ऐसे पांचो मेरु संबंधी २० यमकगिरि हैं।

शत सरांसि ॥ १६ ॥

अर्थ-सरोवर सौ १०० हैं।

यथा—देवकुरु भोगभूमिमें सरोवर ५, उत्तरकुरु भोगभूमिमें सरोवर ५, दोनों ओरके दोनों भद्रशाल बनोंमें ५-५ ऐसे एक मेरु संबंधी २० और पांचों मेरुके १०० सरोवर हैं ॥ १६ ॥

सहस्रं कनकाचलाः ॥ १७ ॥

अर्थ—कनकाचल एक हजार हैं।

यथा—सीता और सीतोदा महानदियोंमें देवकुरु भोगभूमि और उत्तरकुरु भोगभूमिके २ क्षेत्र तथा इन ही सीता और सीतोदा महानदियोंमें पूर्व और पश्चिम भद्रशालके २ क्षेत्र, इन चारों क्षेत्रोंमें पांच पांच द्रह हैं, ऐसे इन बीस द्रहोंके किनारों पर पंक्तिरूप पांच पांच कांचनगिरि हैं, ऐसे एक मेरुके २०० कांचनगिरि और पांचों मेरुके १००० कांचनगिरि हैं ॥ १७ ॥

चत्वारिंशद्दिग्गजनगाः ॥ १८ ॥

अर्थ—दिग्गज पर्वत चालीस हैं।

यथा—पूर्व भद्रशालमें 'पद्मोत्तर' और 'नील' २ दिग्गज, देवकुरुमें 'सस्तिक' और 'अंजन' २ दिग्गज, पश्चिम भद्रशालेमें कुमुद और पलाश २ दिग्गज, उत्तरकुरुमें अवतंश और रोचन २ दिग्गज, ऐसे एक मेरु संबन्धी आठ दिग्गज हैं। इसप्रकार ५ मेरुसंबन्धी ४० दिग्गज हुये।

शतं वक्षारक्ष्मा धराः ॥१९॥

अर्थ—वक्षार पर्वत सौ हैं।

यथा--माल्यवान १ महासौमनस २ विद्युतप्रभ ३ गंधमादन ४ ये चारों गजदन्त पर्वत मेरुकी ईशानादि चारों विदिशाओंमें हैं। चित्रकूट १ पद्मकूट २ नलिन ३ एक-शैल ४ ये चारों वक्षार पर्वत सीता नदीके उत्तर तट पर भद्र-शालवेदीसे आगे क्रमसे हैं। त्रिकूट १ वैश्रवण २ अंजना-त्मा ३ अंजन ४ ये चारों वक्षार पर्वत सीता नदीके दक्षिण-तट पर देवारण्य वेदीसे आगे क्रमसे हैं। भद्धावान १ विजयवान २ आशीविष ३ सुखावह ४ ये चारों वक्षार पर्वत पश्चिम विदेह सीतोदा नदीके दक्षिणतट पर भद्रशाल वेदी से आगे क्रमसे हैं। चन्द्रमाल १ सूर्यमाल २ नागमाल ३ देवमाल ४ ये चारों वक्षार पर्वत पश्चिम विदेह सीतोदा नदी के उत्तरतट पर देवारण्य वेदीसे आगे क्रमसे हैं। ४ गज-दन्त प्रर्वत, १६ वक्षार पर्वत मिलकर २० वक्षार हुवे, यह एक मेरुसंबन्धी हैं, पांचों मेरुके १०० हुए। इसतरह वक्षार पर्वत १०० हैं ॥१९॥

षष्ठिर्विभंगनद्यः ॥२०॥

अर्थ—विभंगा नदी साठ हैं।

यथा—गाधवती १ द्रहवती २ पंकवती ३ यह तीनों नदी सीतानदीके उत्तरवाले वक्षार पर्वतोंके बीच बीचमें हैं।

तप्तजला १ मत्तजला २ उन्मत्तजला ३ यह तीनों नदियां सीतानदीके दक्षिण तटवाले वक्षार पर्वतके बीच बीचमें हैं। क्षारोदा १ सीतोदा २ श्रोतोवाहिनी ३ यह तीनों नदियाँ सीतोदानदीके दक्षिण तटवाले वक्षार पर्वतोंके बीच बीचमें हैं। गम्भीरमालिनी १ फेनमालिनी २ उर्मिमालिनी ३ यह तीनों नदियाँ सीतोदानदीके उत्तर तटवाले वक्षार पर्वतोंके बीच बीचमें हैं। ये बारह विभंगानदी एक मेरुसम्बन्धी हैं, ऐसे पाचों मेरुसम्बन्धी विभंगानदी ६० हैं ॥ २० ॥

षष्ट्युत्तरशतं विदेहजनपदाः ॥ २१ ॥

अर्थ—विदेहक्षेत्र एकसौ साठ हैं।

यथा—कच्छा १ सुकच्छा २ महाकच्छा ३ कच्छकावती ४ आवर्ता ५ लांगलावर्ता ६ पुष्कला ७ पुष्कलावती ८ यह आठों विदेहक्षेत्र सीतानदीके उत्तर तट पर भद्रसाल वेदीसे आगे लगा कर क्रमसे जानना। वत्सा १ सुवत्सा २ महावत्सा ३ वत्सकावती ४ रम्या ५ सुरम्या ६ रमणीया ७ मंगलावती ८ यह आठ विदेहक्षेत्र सीतानदीके दक्षिणतट पर देवारण्यकी वेदीके उरेसे लगा कर क्रमसे हैं। पद्मा १ सुपद्मा २ महापद्मा ३ पद्मकावती ४ शंखा ५ नलिनी ६ कुमुद्रा ७ सरिता ८ यह आठ विदेहक्षेत्रकी सीतोदानदीके दक्षिण तट पर भद्रसाल वेदीसे आगे क्रमपूर्वक जानना। वप्रा १ सुवप्रा २ महावप्रा ३ वप्रकावती ४ गन्धा ५ सुगन्धा ६

गन्धिला ७ गन्धमालिनी ८ यह आठ विदेहक्षेत्रकी सीतोदा नदीके उत्तरतट पर देवारण्य वेदीके उरेसे लगाय क्रमसे हैं। यह सब बत्तीस देश विदेहके एक मेरुसम्बन्धी हैं, पांचों मेरुके १६० विदेहक्षेत्र हैं ॥ २१ ॥

पंचदशकर्मभूमयः ॥ २२ ॥

अर्थ–कर्मभूमि पन्द्रह हैं।

यथा–पाचों भरतक्षेत्रोंमें ५ कर्मभूमि, पाचों ऐरावत क्षेत्रोंमें ५ कर्मभूमि, देवकुरु और उत्तरकुरुक्षेत्रको छोडकर बिदेहक्षेत्रोंमें ५ कर्मभूमि, ऐसे कर्मभूमि १५ हैं ॥ २२ ॥

त्रिंशद्भोगभूमियः ॥ २३ ॥

अर्थ–भोगभूमि तीस हैं।

यथा–देवकुरु और उत्तरकुरुक्षेत्रोंमें उत्तम भोगभूमि २ हरि और रम्यकक्षेत्रोंमें मध्यम भोगभूमि २, हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्रोंमें जघन्य भोगभूमि २ ऐसे १ मेरु संबन्धी ६ भोगभूमि हैं, पांचों मेरुकी ३० भोगभूमि हैं ॥ २३ ॥

चतुस्त्रिंशद्वर्षधर पर्वताः ॥ २४ ॥

अर्थ–वर्षधर पर्वत चौंतीस हैं।

यथा–हिमवान १ महाहिमवान २ निषध ३ नील ४ रुक्मी ५ शिखरी ६ यह छह कुलाचल एक मेरुके हैं, ऐसे पाचों मेरुके ३० हुए और धातकी खण्डके दक्षिण और उत्तरमें इष्वाकार पर्वत २ और पुष्करार्द्धद्वीपके दक्षिण

उत्तरमें इष्वाकार पर्वत २ इसप्रकार सब मिलकर वर्षधर पर्वत ३४ हैं ॥ २४ ॥

त्रिंशत्सरोवराः ॥ २५ ॥

अर्थ—सरोवर तीस हैं।

यथा—पद्म १ महापद्म २ तिगिंछ ३ केसरी ४ पुण्डरीक ५ महापुण्डरीक ६ यह एक मेरुसम्बन्धी छै सरोवर हैं, इस तरह पाचों मेरुके सरोवर ३० हैं ॥ २५ ॥

सप्ततिर्महानद्यः ॥ २६ ॥

अर्थ—महानदी सत्तर हैं।

यथा—गंगा १ सिन्धु २ रोहित ३ रोहितास्या ४ हरित् ५ हरिकान्ता ६ सीता ७ सीतोदा ८ नारी ९ नरकान्ता १० स्वर्णकूला ११ रूप्यकूला १२ रक्ता १३ रक्तोदा १४ यह १४ महानदी एक मेरुसम्बन्धी हैं, पांचों मेरुकी ७० महानदी हैं ॥ २६ ॥

विंशतिर्नाभिभूधराः ॥ २७ ॥

अर्थ—नाभिगिरि बीस हैं।

यथा—श्रद्धावान १ विजयवान २ पद्मवान ३ गन्धवान ४ यह एक मेरु सम्बन्धी ४ नाभिगिरि हैं, पांचो मेरुके २० नाभिगिरि हैं ॥ २७ ॥

सप्तत्यधिकशतं विजयार्धपर्वताः ॥ २८ ॥

अर्थ—विजयार्ध पर्वत एकसौ सत्तर हैं।

यथा-१६० विजार्ध पर्वत तो १६० विदेहक्षेत्रोंमें और ५ भरतक्षेत्रमें, ५ ऐरावतक्षेत्रमें इस तरह विजयार्ध पर्वत १७० हैं ॥ २८ ॥

वृषभागिरयश्चेति ॥ २९ ॥

अर्थ-वृषभगिरि एकसौ सत्तर हैं।

यथा-१६० वृषभगिरि तो विदेहक्षेत्रोंमें, ५ भरतक्षेत्रमें और ५ ऐरावतक्षेत्रमें ऐसे वृषभगिरि १७० हैं ॥ २९ ॥

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥ ३० ॥

अर्थ-देवोंके चार निकाय (समूह) हैं।

यथा—भवनवासी देव १ व्यन्तर देव २ ज्योतिषी देव ३ वैमानिक देव ४ ॥ ३० ॥

भवनवासिनो दशविधाः ॥ ३१ ॥

अर्थ—भवनवासी देव दश प्रकारके हैं।

यथा—असुरकुमार १ नागकुमार २ विद्युत्कुमार ३ सुपर्णकुमार ४ अग्निकुमार ५ पवनकुमार ६ स्तनितकुमार ७ उदधिकुमार ८ द्वीपकुमार ९ दिक्कुमार १० ॥ ३१ ॥

अष्टविधा व्यन्तराः ॥ ३२ ॥

अर्थ—व्यन्तर देव आठ प्रकारके हैं।

यथा—किन्नर १ किंपुरुष २ महोरग ३ गन्धर्व ४ यक्ष ५ राक्षस ६ भूत ७ पिशाच ८ ॥ ३२ ॥

पंचविधा ज्योतिष्काः ॥ ३३ ॥

अर्थ—ज्योतिषी देव पांच प्रकार हैं।

यथा—सूर्य १ चंद्रमा २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारे ५।

द्वादशविधा वैमानिकाः ॥ ३४ ॥

अर्थ—वैमानिक देव बारह प्रकार हैं।

यथा—सोलह स्वर्गोंके बारह इन्द्र हैं जिनका एक एक परिकर (समूह) गिन लेनेसे बारह भेद होते हैं। सौधर्मेन्द्र १ ईशानेन्द्र २ सनत्कुमारेंद्र ३ माहेंद्र ४ ब्रह्मेन्द्र ५ लांतवेन्द्र ६ शुक्रेन्द्र ७ सतारेन्द्र ८ आनतेन्द्र ९ प्राणतेन्द्र १० आरणेन्द्र ११ अच्युतेन्द्र १२ ॥ ३४ ॥

षोडश स्वर्गाः ॥ ३५ ॥

अर्थ—स्वर्ग सोलह हैं।

यथा—सौधर्म १ ऐशान २ सनत्कुमार ३ माहेन्द्र ४ ब्रह्म ५ ब्रह्मोत्तर ६ लांतव ७ कापिष्ठ ८ शुक्र ९ महाशुक्र १० सतार ११ सहस्रार १२ आनत १३ प्राणत १४ आरण १५ अच्युत १६ ॥ ३५ ॥

नवग्रैवेयकाः ॥ ३६ ॥

अर्थ—ग्रैवेयक नौ हैं।

यथा—३ ऊर्ध्वग्रैवेयक ३ मध्यग्रैवेयक ३ अधोग्रैवेयक इसप्रकार ग्रैवेयक ९ हैं ॥ ३६ ॥

नवानुदिशाः ॥ ३७ ॥

अर्थ—अनुदिश विमान नौ हैं।

यथा—आदित्य १ (यह इंद्रक अनुदिश विमान हैं) अर्चि १ अर्चिमालिन २ वैर ३ वैरोचन ४ (यह चार श्रेणीबद्ध अनुदिश विमांन हैं) सोम १ सोमरूप २ अंधक ३ स्फटिक ४ (ये चार प्रकीर्णक अनुदिश विमान हैं) इसप्रकार १+४+४ =९ अनुदिश विमान हैं ॥ ३७ ॥

पंचानुत्तराः ॥ ३८ ॥

अर्थ—अनुत्तर विमान पांच हैं।

यथा—विजय १ वैजयंत २ जयन्त ३ अपराजित ४ (ये चारों श्रेणीबद्ध अनुत्तर विमान हैं) सर्वार्थसिद्धि ५ (ये एक इन्द्रक अनुत्तर विमान हैं) इसप्रकार अनुत्तर विमान ५ हैं ॥ ३८ ॥

त्रिषष्ठि पटलानि ॥ ३९ ॥

अर्थ—समस्त स्वर्गों तथा ग्रैवेयक आदिमें त्रेसठ पटल हैं।

यथा—सौधर्म और ऐशान युगलमें पटल ३१ हैं जिन के नाम, ऋजु १ विमल २ चंद्र ३ वल्गु ४ वीर ५ अरुण ६ नन्दन ७ नलिन ८ काचन ९ रोहित १० चंचत् ११ मारुत १२ ऋद्धीश १३ वैडूर्य १४ रुचक १५ रुचिर १६ अंक १७ स्फटिक १८ तपनीय १९ मेघ २० अभ्र २१

हारिद्र २२ पुष्प २३ लोहिताक्ष २४ वज्र २५ नन्द्यावर्त २६ प्रभंकर २७ पृष्टकर २८ गज २९ मित्र ३० प्रभ ३१ इसतरह प्रथम युगलके पटल ३१ हैं।

सनत्कुमार-माहेन्द्र द्वितीय युगलमें पटल ७ हैं। अंजन १ वनमाल २ नाग ३ गरुड़ ४ लांगल ५ बलभद्र ६ चक्र ७ ऐसे दूसरे युगलके पटल ७ हैं।

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर तृतीय युगलमें पटल ४ हैं। अरिष्ट १ सुरस २ ब्रह्म ३ ब्रह्मोत्तर ४ ऐसे चार।

लांतव-कापिष्ट चतुर्थ युगलमें पटल २ हैं। ब्रह्महृदय १ लांतव २ इसप्रकार चतुर्थ युगलके पटल २।

शुक्र-महाशुक्र पंचम युगलमें पटल १ है। शुक्र १ ऐसे पंचम युगलका पटल १।

सतार-सहस्रार षष्ठम युगलमें पटल १ है। सतार १ इसतरह छठे युगलमें पटल १।

आनत-प्राणत सप्तम युगल तथा आरण अच्युत अष्टम युगल इन दोनों युगलोंमें पटल ६ हैं। आनत १ प्राणत २ पुष्पक ३ सातक ४ आरण ५ अच्युत ६ ऐसे सप्तम अष्टम दोनों युगलोंके पटल ६। इसप्रकार ३१+७+४+२+१+१+६=५२ पटल हुए और—

मध्यग्रैवेयकके ३ पटल, यशोधर १ सुभद्र २ विशाल ३, अधोग्रैवेयकके ३ पटल, सुदर्शन १ अमोघ २ सुप्रबुद्ध ३,

ऊर्ध्वग्रैवेयकके ३ पटल, सुमन १ सौमनस २ प्रीतिंकर ३, अनुदिश विमानोंका पटल १, आदित्य १ और अनुत्तर विमानोंका १ पटल, सर्वार्थसिद्धि १–इसप्रकार ५२+९+१+१=६३, सोलह स्वर्ग तथा ग्रैवेयक आदिमें ६३ पटल हैं ॥ ३९ ॥

इंद्रकाणि च ॥ ४० ॥

अर्थ–इन्द्रक विमान त्रेसठ हैं।

यथा–स्वर्गके पहले युगलमें ३१ दूसरे युगलमें ७ तीसरे युगलमें ४ चौथे युगलमें २ पांचवें युगलमें १ छठे युगलमें १ सातवें आठवें दोनों युगलोंमें ६ इसप्रकार सोलह स्वर्गोंमें ५२ इंद्रकविमान हैं।

नव ग्रैवेयकोंमें ९ नव अनुदिशोंमें १ पांच अनुत्तरोंमें १ इसप्रकार ३१+७+४+२+१+१+६+९+१+१=६३ इन्द्रक विमान हैं ॥ ४० ॥

षोडशोत्तराष्टशतान्वितसप्तसहस्रं श्रेणिबद्धानि ॥ ४१ ॥

अर्थ–सात हजार आठ सौ सोलह श्रेणिबद्ध विमान हैं।

यथा—स्वर्गके पहले युगलमें ३१ पटल हैं, पहले पटलका नाम ऋजु विमान है। इस विमानकी चारों दिशाओंमें ६२–६२ श्रेणिबद्ध विमान हैं अर्थात् चारों दिशाओंमें एक पटलके २४८ श्रेणिबद्ध विमान हैं। इसके उपरांत ६२ पटल

और हैं, उनमें विमानोंकी संख्या ऊपर-ऊपर क्रमसे चार चार कम होती गई है अर्थात् दूसरे पटलमें २४४, तीसरेमें २४०, चौथेमें २३६, इस क्रमसे अंतके सर्वार्थसिद्धि पटलमें केवल चार विमान हैं और उसके नीचे आदित्य नामक पटलमें भी चार ही विमान हैं इसप्रकार संपूर्ण ६३ पटलोंमें विमानोंकी संख्या ७८१६ है ॥ ४१ ॥

षटचत्वारिंशदुत्तरैकशतानीतनवत्यशीति-सहस्रालंकृतचतुरशीतिलक्षं प्रकीर्णकानि ॥ ४२ ॥

अर्थ—चौरासी लाख नवासी हजार एक सौ छियालिस प्रकीर्णक विमान हैं।

नोट—इस सूत्रमें दो संख्या अधिक हैं, इंद्रक ६३ + श्रेणीबद्ध ७८१६=७८७९ होते हैं। सब विमान ८४९७०२३ हैं इसलिये ८४९७०२३मेंसे ७८७९ बाद जाने पर ८४८९१४४ प्रकीर्णक विमान होने चाहिये।

त्रयोविंशत्युत्तरसप्तनवति सहस्रान्वितचतुरशीतिलक्षमेवं विमानानि ॥ ४३ ॥

अर्थ—तीनों प्रकारके विमान चौरासी लाख सत्तानवे हजार तेईस हैं।

यथा—प्रथम स्वर्गमें ३२०००००, द्वितीय स्वर्गमें

२८००००० , तृतीय स्वर्गमें १२००००० , चतुर्थ स्वर्गमें ८००००० , तीसरे स्वर्ग युगलमें ४००००० , चौथे स्वर्ग युगलमें ५०००० , पांचवें स्वर्ग युगलमें ४०००० , छठे स्वर्ग युगलमें ६००० , सातवें तथा आठवें स्वर्ग युगलमें ७०० , तीनों अधोग्रैवेयकोंमें १११ , तीनों मध्यग्रैवेयकोंमें १०७ , तीनों ऊर्ध्वग्रैवेयकोंमें ९१ , नौ अनुदिशोंमें ९ और पांच अनुत्तरोंमें ५ इसप्रकार ८४,९७,०२३ सब विमान हैं ॥ ४३ ॥

ब्रह्मलोकालयाश्चतुर्विंशतिलौकान्तिका ॥ ४४ ॥

अर्थ—लौकांतिक देव चौबीस हैं।

यथा—सारस्वत १ आदित्य २ वह्नि ३ अरुण ४ गर्दतोय ५ तुषित ६ अव्याबाध ७ अरिष्ट ८ अग्न्याभ ९ सूर्याभ १० चन्द्राभ ११ सत्याभ १२ श्रेयस्कर १३ क्षेमंकर १४ वृषभेष्ट १५ कामचर १६ निर्माणरज १७ दिगंतरक्षित १८ आत्मरक्षित १९ सर्वरक्षित २० मरुत २१ वसु २२ अश्व २३ विश्व २४ ॥ ४४ ॥

अणिमाद्यष्टगुणाः ॥ ४५ ॥

अर्थ—अणिमादिक ऋद्धि आठ हैं।

यथा—अणिमा १ महिमा २ लघिमा ३ गरिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशत्व ७ वशित्व ८ ॥ ४५ ॥

इति शास्त्रसारसमुच्चय भाषाटीकासह प्रथमोऽध्यायः।

अथ पंचलब्धयः ॥ १ ॥

अर्थ–लब्धि पांच हैं।

यथा–क्षायोपशम लब्धि १ विशुद्धि लब्धि २ देशना-लब्धि ३ प्रायोग्य लब्धि ४ करण लब्धि ५ ॥ १ ॥

करणं त्रिविधम् ॥ २ ॥

अर्थ–करण लब्धि तीन प्रकार है।

यथा–अधःकरण १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिकरण ३ ॥

सम्यक्त्वं द्विविधम् ॥ ३ ॥

अर्थ–सम्यग्दर्शन (सम्यक्त्व) दो प्रकार है।

यथा–निसर्गज १ अधिगमज २ अथवा सराग सम्यक्त्व १ वीतराग सम्यक्त्व २ ॥ ३ ॥

त्रिविधम् ॥ ४ ॥

अर्थ–सम्यग्दर्शन तीन प्रकार भी है।

यथा–औपशमिक सम्यक्त्व १ क्षायोपशमिक सम्यक्त्व २ क्षायिक सम्यक्त्व ३ ॥ ४ ॥

दशविधं वा ॥ ५ ॥

अर्थ–सम्यग्दर्शन दश प्रकारका भी है।

यथा–आज्ञा सम्यक्त्व १ मार्ग सम्यक्त्व २ बीज सम्यक्त्व ३ उपदेश सम्यक्त्व ४ सूत्र सम्यक्त्व ५ संक्षेप सम्य-

क्त्व ६ विस्तार सम्यक्त्व ७ अर्थ सम्यक्त्व ८ अवगाढ-सम्यक्त्व ९ परमावगाढ़ सम्यक्त्व १० ॥ ५ ॥

तत्र वेदकसम्यक्त्वस्य पंचविंशतिर्मलानि ॥ ६ ॥

अर्थ-वेदक सम्यक्त्वके पच्चीस मल दोष हैं ।

यथा-शंका १ कांक्षा २ विचिकित्सा ३ मूढ़दृष्टि ४ अनुपगूहन ५ अस्थितिकरण ६ अवात्सल्य ७ अप्रभावना ८ ऐसे ८ मलदोष और जातिमद १ कुलमद २ रूपमद ३ बलमद ४ ऋद्धिमद ५ विद्यामद ६ तपमद ७ प्रभुताका मद ८ ऐसे मद ८ तथा कुगुरु १ कुदेव २ कुधर्म ३ कुगुरुउपासक ४ कुदेवउपासक ५ कुधर्म-उपासक ६ ऐसे अनायतन ६ और लोकमूढ़ता १ देवमूढ़ता २ पाखंडमूढता ३ ऐसे मूढता ३ यह सब मिलकर (८+८+६+३=२५) पच्चीस मलदोष कहलाते हैं ॥ ६ ॥

अष्टांगानि ॥ ७ ॥

अर्थ—सम्यग्दर्शनके अंग आठ हैं ।

यथा—निःशंकित १ निःकांक्षित २ निर्विचिकित्सा ३ अमूढदृष्टि ४ उपगूहन ५ स्थितिकरण ६ वात्सल्य ७ प्रभावना ८ ॥ ७ ॥

अष्टगुणाः ॥ ८ ॥

अर्थ-सम्यग्दर्शनके गुण आठ हैं ।

यथा-संवेद १ निर्वेद २ गर्हा ३ साम्यभाव ४ भक्ति ५ कारुण्य ६ वात्सल्य ७ धर्मानुराग ८ ॥ ८ ॥

पंचातिचारा इति ॥ ९ ॥

अर्थ—सम्यग्दर्शनके अतीचार पांच हैं।

यथा-शंका १ कांक्षा २ विचिकित्सा ३ अन्यदृष्टि-प्रशंसा ४ अन्यदृष्टि संस्तव ५ ॥ ९ ॥

एकादशनिलयाः ॥ १० ॥

अर्थ-श्रावकके संयम पालन करनेके ग्यारह स्थान हैं (जो एकादश प्रतिमाके नामसे प्रसिद्ध हैं)।

यथा—दर्शनप्रतिमा १ व्रतप्रतिमा २ सामायिकप्रतिमा ३ प्रोषधप्रतिमा ४ सचित्तत्यागप्रतिमा ५ रात्रिभोजनत्याग प्रतिमा ६ ब्रह्मचर्यप्रतिमा ७ आरंभत्याग प्रतिमा ८ परिग्रह-त्याग प्रतिमा ९ अनुमतित्याग प्रतिमा १० उद्दिष्टत्याग प्रतिमा ११ ॥ १० ॥

त्रिविधो निर्वेगः ॥ ११ ॥

अर्थ-निर्वेग तीन प्रकार है।

यथा-रति १ अरति २ मोह ३ अथवा संसार १ शरीर २ भोग ३ इनसे विरक्त होना ॥ ११ ॥

सप्त व्यसनानि ॥ १२ ॥

अर्थ-व्यसन सात हैं।

यथा-जूआ १ चोरी २ मांसभक्षण ३ मदिरापान ४ वेश्यागमन ४ परस्त्रीरमण ६ शिकार ७ ॥ १२॥

शल्यत्रयम् ॥ १३॥

अर्थ-शल्य तीन हैं।

यथा-मायाशल्य १ मिथ्याशल्य २ निदानशल्य ३।

अष्टौ मूलगुणाः ॥ १४॥

अर्थ—श्रावकके मूल गुण आठ हैं।

यथा—मद्य १ मांस २ मधु ३ ऐसे तीन मकार तथा उदम्बर (गूलर) १ काकोदुम्बर (अंजीर) बडका फल ३ पीपलका फल ४ पाखरफल ५ ऐसे पांच उदम्बर फल इन आठोंका सर्वथा त्याग; ऐसे अष्ट मूलगुण अथवा-देवबन्दना १ दया पालना २ जल छानकर पीना ३ मांस-त्याग ४ मदिरात्याग ५ मधुत्याग ६ रात्रिभोजनत्याग ७ पंच उदम्बर फल त्याग ८ इसतरह अष्ट मूलगुण अथवा-मद्यत्याग १ मांसत्याग २ मधुत्याग ३ पांच अणुव्रत पालना ५ इसतरह अष्ट मूलगुण अथवा-

पांच अणुव्रत पालना ५ मांसत्याग ६ जूवात्याग ७ मद्यत्याग ८ इसप्रकार मूलगुण ८ ॥ १४॥

पंचाणुव्रतानि ॥ १५॥

अर्थ-श्रावकके अणुव्रत पांच हैं।

यथा-हिंसा १ असत्य २ चोरी ३ अब्रह्म ४ इन

चोरोंको एकदेश त्याग तथा परिग्रह परिमाण ५ इसप्रकार पांच अणुव्रत हैं॥ १५॥

त्रीणि गुणव्रतानि॥ १६॥

अर्थ–गुणव्रत तीन हैं।

यथा–दिग्व्रत १ देशव्रत २ अनर्थदण्डव्रत ३॥१६॥

शिक्षाव्रतानि चत्वारि॥ १७॥

अर्थ–शिक्षाव्रत चार हैं।

यथा–सामायिक १ प्रोषधोपवास २ भोगोपभोग परिमाण ३ अतिथिसंविभाग ४ ऐसे शिक्षाव्रत ४ हैं॥ १७॥

व्रतशीलेषु पंच पंचातीचाराः॥ १८॥

अर्थ–पांच अणुव्रत, सप्त शील (तीन गुणव्रत तथा चार शिक्षाव्रत इन्हें सप्तशील कहते हैं) इन सबके पांच पांच अतीचार हैं।

यथा–हिंसा अणुव्रतके पांच अतीचार हैं–वध १ बन्धन २ छेदन ३ गुरुभारारोपण ४ अन्नपान-निरोध ५ ऐसे अहिंसा अणुव्रतके अतीचार ५।

सत्याणुव्रतके अतीचार पांच हैं–मिथ्योपदेश १ रहोभ्याख्यान २ कूटलेखक्रिया ३ न्यासापहार ४ साकारमंत्रभेद ५ ऐसे सत्यअणुव्रतके अतीचार ५।

अचौर्य अणुव्रतके अतीचार पांच हैं–स्तेनप्रयोग १ स्तेना-

हृतादान २ विरुद्धराज्यातिक्रम ३ हीनाधिकमानोन्मान ४ प्रतिरूपक व्यवहार ५ ऐसे अचौर्याणुव्रतके अतीचार ५।

ब्रह्मचर्याणुव्रतके अतीचार ५ हैं–परविवाहकरण १ परगृहीता इत्वरिकागमन २ अगृहीता इत्वरिकागमन ३ अनंगक्रीडा ४ कामतीव्राभिनिवेश ५ ऐसे ब्रह्मचर्याणुव्रतके अतीचार ५।

परिग्रह परिमाणव्रतके अतीचार पांच हैं–शक्तिसे अधिक काम लेना १ विना आवश्यक वस्तु संग्रह करना २ अन्यके पास अधिक परिग्रह देख आश्चर्य करना ३ किफायतसे माल मिले ऐसा लोभ रखना ४ लोभ कर शक्तिसे अधिक लादना ५ अथवा क्षेत्रवास्तु १ हिरण्यस्वर्ण २ धनधान्य ३ दासीदास ४ कुप्य ५ इनके प्रमाणका उल्लंघन करना ऐसे परिग्रहपरिमाण व्रतके अतीचार ५।

दिग्व्रतके अतीचार ५ हैं–ऊर्ध्वातिक्रम १ अधोऽतिक्रम २ तिर्यग्व्यतिक्रम ३ क्षेत्रवृद्धि ४ स्मृत्यन्तराधान ५ ऐसे दिग्व्रतके अतीचार ५।

देशव्रतके अतीचार ५ हैं–आनयन १ प्रेष्यप्रयोग २ शब्दानुपात ३ रूपानुपात ४ पुद्गलक्षेप ५।

अनर्थदण्डव्रतके अतीचार ५ हैं–कंदर्प १ कौत्कुच्य २ मौखर्य ३ भोगोपभोगानर्थक्य ४ असमीक्षाधिकरण ५।

सामायिकव्रतके अतीचार पांच हैं–मनोदुष्प्रणिधान १

वचनदुष्प्रणिधान २ कायदुष्प्रणिधान ३ अनादर ४ स्मरणानुपस्थान ५।

प्रोषधोपवासके अतीचार पांच हैं—अप्रतिवेक्षिताप्रमार्जित संस्तरोपक्रमण १ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितादान २ उत्सर्जन (उत्सर्ग) ३ अनादर ४ स्मृत्यनुपस्थान ५।

भोगोपभोगव्रतके अतीचार पांच हैं—विषयोंसे उपेक्षा करना १ विषय संग्रहकी अधिक तृष्णा रखना २ विषयोंका बारम्बार स्मरण करना ३ विषयोंमें अधिक लोलुपी बने रहना ४ विषयोंका बारम्बार चिन्तवन (अनुभव) करना ५ अथवा सचित्त वस्तु खाना १ सचित्त वस्तुसे सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु खाना २ सचित्तसे मिला हुवा भोजन करना ३ अभिषव भोजन करना ४ दुःपक्व भोजन करना ५।

अतिथिसंविभागव्रतके अतीचार पांच हैं—सचित्तनिक्षेप १ सचित्तापिधान २ परव्यपदेश ३ मत्सरता ४ कालातिक्रम ५ तथा दूसरे प्रकार—हरितपिधान १ अनादर २ अस्मरण ३ मत्सरता ४ वैय्यावृत्य व्यतिक्रम ५ ॥ १८ ॥

मौनसमयाः सप्त ॥ १९ ॥

अर्थ—सप्त समय मौन रहना चाहिये।

यथा—भोजन समय १ मैथुन समय २ वमन समय ३ स्नान समय ४ मलमोचन समय ५ सामायिक समय ६ पूजन समय ७ ॥ १९ ॥

अन्तरायाणि च ॥ २० ॥

अर्थ-भोजनके अन्तराय सात हैं।

यथा-हड्डी १ मांस २ पीव (राध) ३ रक्त ४ गीला चमड़ा ५ विष्ठा ६ मरा हुवा प्राणी ७, इनके दृष्टिगोचर होनेसे श्रावकको भोजनका त्याग करना चाहिये ॥ २० ॥

श्रावकधर्मश्चतुर्विधः ॥ २१ ॥

अर्थ-श्रावकका धर्म चार प्रकार है।

यथा—दान देना १ पूजा करना २ शील पालना ३ उपवास करना ४ ॥ २१ ॥

जैनाश्रमश्च ॥ २२ ॥

अर्थ-जैनाश्रम चार प्रकार हैं।

यथा-ब्रह्मचर्याश्रम १ गृहस्थाश्रम २ वानःप्रस्थाश्रम ३ भिक्षुकाश्रम ४ ॥ २२ ॥

तत्र ब्रह्मचारिणः पंचविधाः ॥ २३ ॥

अर्थ-ब्रह्मचारी पांच प्रकारके हैं।

यथा-उपनयन १ अदीक्षित २ अवलंब ३ गूढ ४ नैष्ठिक ५ ॥ २३ ॥

आर्यकर्म्माणि षट् ॥ २४ ॥

अर्थ-आर्य कर्म छै प्रकार हैं।

यथा-इज्या १ वार्ता २ दत्ति ३ संयम ४ स्वाध्याय ५ तप ६ ॥ २४ ॥

इज्या दशविधाः ॥ २५ ॥

अर्थ—पूजा दश प्रकार है।

यथा—अर्हन्त पूजा १ सिद्ध पूजा २ आचार्य पूजा ३ उपाध्याय पूजा ४ सर्वसाधु पूजा ५ जिनबिंब पूजा ६ शास्त्र पूजा ७ जिनवाणी पूजा ८ सम्यग्दर्शन पूजा ९ दशलक्षण-धर्म पूजा १० ॥ २५ ॥

अर्थोपार्जनकर्म्माणि षट् ॥ २६ ॥

अर्थ—द्रव्योपार्जनके काम ६ प्रकार हैं।

यथा—असिकर्म १ मसिकर्म २ कृषिकर्म ३ विद्याकर्म ४ शिल्पिकर्म ५ वाणिज्यकर्म ६ ॥ २६ ॥

दत्तिश्चतुर्विधाः ॥ २७ ॥

अर्थ—दत्ति चार प्रकार है।

यथा—पात्रदत्ति १ समदत्ति २ दयादत्ति ३ सर्वदत्ति ४।

क्षत्रियो द्विविधः ॥ २८ ॥

अर्थ—क्षत्रि दो प्रकार हैं।

यथा—जातिय क्षत्रिय १ तीर्थ क्षत्रिय २ ॥ २८ ॥

भिक्षुश्चतुर्विधः ॥ २९ ॥

अर्थ—भिक्षुक चार प्रकार हैं।

यथा—ऋषि १ यति २ मुनि ३ अनगार ४ ॥ २९ ॥

मुनयस्त्रिविधाः ॥ ३० ॥

अर्थ–मुनि तीन प्रकार हैं।

यथा–आचार्य १ उपाध्याय २ सर्वसाधु ३ ॥ ३० ॥

ऋषयश्चतुर्विधाः ॥ ३१ ॥

अर्थ-ऋषि चार प्रकार हैं।

यथा–राजर्षि १ ब्रह्मर्षि २ देवर्षि ३ परमर्षि ४ ॥३१॥

राजर्षयो द्विविधाः ॥ ३२ ॥

अर्थ—राज ऋषि दो प्रकार हैं।

यथा—

ब्रह्मर्षयश्च ॥ ३३ ॥

अर्थ–ब्रह्मऋषि दो प्रकार हैं।

यथा–

मरणं द्वित्रिचतुःपंचाविधं वा ॥ ३४ ॥

अर्थ—मरण दो प्रकार, तीन प्रकार, चार प्रकार तथा पांच प्रकार हैं।

यथा–बाल मरण १ पंडित मरण २ ऐसे मरण दो प्रकार हैं।

बालमरण १ बालपंडित मरण २ पंडित मरण ३ ऐसे मरण तीन प्रकार हैं।

बालबालमरण १ बालमरण २ बालपंडितमरण ३ पंडित मरण ४ ऐसे मरण ४ प्रकार हैं।

बालबालमरण १ बालमरण २ बालपंडितमरण ३ पंडितमरण ४ पंडितपंडितमरण ५ ऐसे मरण ५ प्रकार हैं।

तस्य पंचातिचारा इति ॥ ३५ ॥

सल्लेखन मरण के अतीचार पांच हैं।

यथा—जीविताशंसा १ मरणाशंसा २ मित्रानुराग ३ सुखानुबन्ध ४ ॥ ३५ ॥

द्वादशानुप्रेक्षा ॥ ३६ ॥

अर्थ—अनुप्रेक्षा (भावना) बारह हैं।

यथा—अध्रुवानुप्रेक्षा १ अशरणानुप्रेक्षा २ संसारानुप्रेक्षा ३ एकत्वानुप्रेक्षा ४ अनेकत्वानुप्रेक्षा ५ अशुचित्वानुप्रेक्षा ६ आस्रवानुप्रेक्षा ७ संवरानुप्रेक्षा ८ निर्जरानुप्रेक्षा ९ लोकानुप्रेक्षा १० बोधदुर्लभानुप्रेक्षा ११ धर्मानुप्रेक्षा १२।

यतिधर्मो दशविधः ॥ ३७ ॥

अर्थ—यतिका धर्म दश प्रकार है।

यथा—उत्तम क्षमा १ मार्दव २ आर्जव ३ शौच ४ सत्य ५ संयम ६ तप ७ त्याग ८ आकिंचन्य ९ ब्रह्मचर्य १०।

अष्टाविंशतिर्मूलगुणाः ॥ ३८ ॥

अर्थ—साधुके अट्ठाईस मूलगुण होते हैं।

यथा—५ महाव्रत, ५ समिति, ५ पंचेंद्रियनिरोध, १ केशलोंच, १ वस्त्रत्याग, १ दन्तधावनत्याग, १ स्नानत्याग

१ भूमिशयन, १ खडे हो कर दिनमें एकवार आहार, १ पाणिपात्राहार, ६ षट् आवश्यक क्रियायें ऐसे २८ मूलगुण हैं ॥ ३८ ॥

पंचमहाव्रतस्थैर्यार्थं भावनाः पंच पंच ॥ ३९ ॥

अर्थ—पांचों महाव्रतोंकी स्थिरिके लिये पांच पांच भावनाएं हैं ।

यथा—अहिंसामहाव्रतकी भावना ५ हैं, मनोगुप्ति १ वचनगुप्ति २ ईर्यासमिति ३ आदाननिक्षेपणसमिति ४ अवलोकितअन्नपान ५ ऐसे ५ ।

सत्यमहाव्रतकी भावना ५ हैं, क्रोधका त्याग १ लोभका त्याग २ हास्यका त्याग ३ भयका त्याग ४ अनुवीचीभाषणत्याग ५ ऐसे ५ ।

अचौर्यमहाव्रतकी भावना ५ हैं, शून्यागारवास १ विमोचितावास २ परोपरोधाकरण ३ भैक्ष्यशुद्धि ४ सधर्माविसम्वाद ५ ऐसे ५ ।

ब्रह्मचर्यव्रतकी भावना ५ हैं, स्त्रीरागकथाश्रवणत्याग १ तन्मनोहरांगनिरीक्षणत्याग २ पूर्वरतानुस्मरणव्यपोह ३ वृष्येष्टरसानुभवनिरास ४ स्वशरीरसंस्कारवर्जन ५ ऐसे ५ ।

परिग्रहत्यागमहाव्रतकी भावना ५ हैं, पांचों इन्द्रियोंके विषयमें राग द्वेष न करना ऐसे ५ ॥ ३९ ॥

तिस्रो गुप्तयः ॥ ४० ॥

अर्थ—गुप्ति तीन हैं ।

यथा—मनोगुप्ति १ वचनगुप्ति २ कायगुप्ति ३ ॥ ४० ॥

अष्टौ प्रवचनमातृकाः ॥ ४१ ॥

अर्थ—प्रवचनमातृका आठ हैं ।

यथा—५ समिति ३ गुप्ति ऐसे ८ ॥ ४१ ॥

द्वाविंशति परीषहाः ॥ ४२ ॥

अर्थ-परीषह बाईस हैं ।

यथ—क्षुधा १ तृषा २ शीत ३ उष्ण ४ दंशमशक ५ नाग्न्य ६ अरति ७ स्त्री ८ चर्या ९ निषद्या १० शय्या ११ आक्रोश १२ वध १३ याचना १४ अलाभ १५ रोग १६ तृणस्पर्श १७ मल १८ सत्कारपुरस्कार १९ प्रज्ञा २० अज्ञान २१ अदर्शन २२ ॥ ४२ ॥

द्वादशविधं तपः ॥ ४३ ॥

अर्थ—तप बारह प्रकार हैं ।

यथा—अनशन १ अवमौदर्य २ व्रतपरिसंख्यान ३ रसपरित्याग ४ विविक्तशय्यासन ५ कायक्लेश ६ ऐसे ६ बाह्यतप हैं और—

प्रायश्चित १ विनय २ वैय्यावृत्य ३ स्वाध्याय ४ व्युत्सर्ग ५ ध्यान ६ ऐसे ६ आभ्यन्तर तप, सब मिलकर बारह प्रकार हैं ॥ ४३ ॥

दशविधानि प्रायश्चित्तानि ॥ ४४ ॥

अर्थ—प्रायश्चित्त दश प्रकार हैं।

यथा—आलोचना १ प्रतिक्रमण २ उभय ३ विवेक ४ व्युत्सर्ग ५ तप ६ छेद ७ परिहार ८ उपस्थापन ९ मूल १० ऐसे दश प्रायश्चित्त हैं ॥ ४४ ॥

आलोचनं च ॥ ४५ ॥

अर्थ—आलोचना प्रायश्चित्तके दोष दश हैं।

यथा—आकंपित १ अनुमानित २ दृष्ट ३ बादरदोष ४ सूक्ष्म ५ छन्न ६ शब्दाकुलित ७ बहुजन ८ अव्यक्त ९ तत्सेव १० ऐसे आलोचनाके दश दोष हैं।

चतुर्विधो विनयः ॥ ४६ ॥

अर्थ—विनय तप चार प्रकार हैं।

यथा—ज्ञानविनय १ दर्शनविनय २ चारित्रविनय ३ उपचारविनय ४ ॥ ४६ ॥

दशविधानि वैय्यावृत्यानि ॥ ४७ ॥

अर्थ—वैय्यावृत्य तप दश प्रकार हैं।

यथा—आचार्य वैय्यावृत्य १ उपाध्याय वैय्यावृत्य २ तपस्वी वैय्यावृत्य ३ शैक्ष वैय्यावृत्य ४ ग्लान वैय्यावृत्य ५ गण वैय्यावृत्य ६ कुल वैय्यावृत्य ७ संघ वैय्यावृत्य ८ साधु वैय्यावृत्य ९ मनोज्ञ वैय्यावृत्य १० इसप्रकार दश वैय्यावृत्य तप हैं ॥ ४७ ॥

पंचविधः स्वाध्यायः ४८ ॥

अर्थ—स्वाध्याय तप पांच प्रकार है।

यथा—वाचना १ पृच्छना २ अनुप्रेक्षा ३ आम्नाय ४ धर्मोपदेश ५ इसप्रकार स्वाध्याय ५ पांच प्रकारका है॥४८॥

द्विविधो व्युत्सर्गः ॥ ४९ ॥

अर्थ—व्युत्सर्ग तप दो प्रकार है।

यथा—बाह्योपधित्याग (व्युत्सर्ग) तप १ अभ्यन्तरोपधित्याग (व्युत्सर्ग) तप २ ॥ ४९ ॥

ध्यानं चतुर्विधम् ॥ ५० ॥

अर्थ—ध्यान तप चार प्रकार है।

यथा—आर्त्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्म्यध्यान ३ और शुक्लध्यान ४ ॥ ५० ॥

आर्त्तरौद्रधर्म्मशुक्लं च ॥ ५१ ॥

अर्थ—चारों ध्यान चार चार प्रकारके हैं।

यथा—आर्त्तध्यान चार प्रकार है, अनिष्ट संयोगज आर्त्तध्यान १. इष्टवियोगज आर्त्तध्यान २ पीडाचिन्तवन आर्त्तध्यान ३ निदानबन्ध आर्त्तध्यान ४।

रौद्रध्यान चार प्रकार है, हिंसानन्द १ मृषानन्द २ चौर्यानन्द ३ परिग्रहानन्द ४।

धर्म्यध्यान चार प्रकार है, आज्ञाविचय धर्म्यध्यान १

अपायविचय धर्म्यध्यान २ विपाकविचय धर्म्यध्यान ३ संस्थानविचय धर्म्यध्यान ४।

शुक्लध्यान चार प्रकार है, पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान १ एकत्ववितर्कअवीचार शुक्लध्यान २ सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति शुक्लध्यान ३ व्युपरतक्रियानिवर्ति शुक्लध्यान ४ इसप्रकार चारों ध्यान ४–४ प्रकार हैं॥ ५१॥

धर्म्यं दशविधं वा॥ ५२॥

अर्थ–धर्म्यध्यान दश प्रकार है।

यथा–अपायविचय १ उपायविचय २ जीवविचय ३ अजीवविचय ४ विपाकविचय ५ विरागविचय ६ भवविचय ७ संस्थानविचय ८ आज्ञाविचय ९ हेतुविचय १० ऐसे धर्मध्यान १० प्रकार है॥ ५२॥

अष्टर्द्धयः॥ ५३॥

अर्थ–ऋद्धि आठ हैं।

यथा–बुद्धिऋद्धि १ क्रियाऋद्धि २ तपऋद्धि ३ बलऋद्धि ४ औषधऋद्धि ५ रसऋद्धि ६ क्षेत्रऋद्धि ७ विक्रियाऋद्धि ८॥ ५३॥

बुद्धिरष्टादशविधाः॥ ५४॥

अर्थ–बुद्धिऋद्धि अठारह प्रकार है।

यथा–केवलज्ञानऋद्धि १ अवधिज्ञानऋद्धि २ मनःप-

र्युज्ञानऋद्धि ३ बीजऋद्धि ४ कोष्ठऋद्धि ५ पादानुसारिणी ऋद्धि ६ संभिन्नश्रोतृत्वऋद्धि ७ श्रोत्रऋद्धि ८ दूरास्वादन-ऋद्धि ९ दूरस्पर्शनऋद्धि १० दूरघ्राणऋद्धि ११ दशपूर्व-ऋद्धि १२ चतुर्दश पूर्वऋद्धि १३ अष्टांगमहानिमित्तज्ञता-ऋद्धि १४ प्रज्ञाश्रवणऋद्धि १५ प्रत्येकवादित्वऋद्धि १६ प्रत्येकबुद्धित्वऋद्धि १७ रसनऋद्धि १८ इसप्रकार बुद्धि-रिद्धि अठारह प्रकार है ॥ ५४ ॥

क्रिया द्विविधा ॥ ५५ ॥

अर्थ—क्रियाऋद्धि दो प्रकार है।

यथा—आकाशगामिनी १ चारणा २ ऐसे क्रियाऋद्धि दो प्रकार है ॥ ५५ ॥

विक्रियैकादशविधाः ॥ ५६ ॥

अर्थ—विक्रियाऋद्धि ग्यारह प्रकार है।

यथा—अणिमा १ महिमा २ लघिमा ३ गरिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ अप्रतिघात ९ अन्तरधान १० कामरूपित्व ११ इसप्रकार ग्यारह विक्रिया रिद्धिके भेद हैं ॥ ५६ ॥

तपः सप्तविधम् ॥ ५७ ॥

अर्थ—तपऋद्धि सात प्रकार है।

यथा—दीप्ततपऋद्धि १ तप्ततपऋद्धि २ महाग्रतपऋद्धि ३

महाघोरतप ऋद्धि ४ तपोघोरऋद्धि ५ पराक्रमघोर ऋद्धि ६ ब्रह्मचर्य ऋद्धि ७ ॥ ५७ ॥

बलं त्रिविधम् ॥ ५८ ॥

अर्थ–बल ऋद्धि तीन प्रकार है।

यथा–मनोबल ऋद्धि १ वचनबल ऋद्धि २ कायबल-ऋद्धि ३ ॥ ५८ ॥

भेषजमष्टविधम् ॥ ५९ ॥

अर्थ–भेषजऋद्धि आठ प्रकार है।

यथा–आमर्षौषधिऋद्धि १ सर्वौषधऋद्धि २ आशीर्विषऋद्धि ३ दृष्टिविषंविषऋद्धि ४ क्ष्वेलौषधि ऋद्धि ५ विड़ौषधि ऋद्धि ६ जल्लौषधि ऋद्धि ७ मलौषधि ऋद्धि ८ ॥५९॥

रसः षड्विधः ॥ ६० ॥

अर्थ–रसऋद्धि छह प्रकार है।

यथा–आस्यविषरस ऋद्धि १ दृष्टयविषरस ऋद्धि २ क्षीरस्रावीरस ऋद्धि ३ मधुस्रावीरस ऋद्धि ४ घृतस्रावीरस ऋद्धि ५ अमृतस्रावीरस ऋद्धि ६ ॥ ६० ॥

अक्षीणर्द्धिर्द्विविधश्चेति ॥ ६१ ॥

अर्थ–अक्षीण ऋद्धि दो प्रकार है।

यथा–अक्षीणमहानस ऋद्धि १ अक्षीणसंवास ऋद्धि २

चतुस्त्रिंशदुत्तरगुणाः ॥ ६२ ॥

अर्थ—उत्तरगुण चौंतीस हैं।

यथा—

पंचविधा निर्ग्रंथाः ॥ ६३ ॥

अर्थ—निर्ग्रन्थ मुनि पांच प्रकार हैं।

यथा—पुलाक मुनि १ वकुश मुनि २ कुशील मुनि ३ निर्ग्रन्थ मुनि ४ स्नातक मुनि ५ इसप्रकार निर्ग्रन्थ मुनि पांच प्रकार हैं ॥ ६३ ॥

आचारश्च ॥ ६४ ॥

अर्थ—आचार पांच प्रकार हैं।

यथा—ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपसाचार ४ वीर्याचार ५ ॥ ६४ ॥

समाचारं दशविधम् ॥ ६५ ॥

अर्थ—समाचार दश प्रकार हैं।

यथा—इच्छाकार १ मिथ्याकार २ तथाकार ३ आसिका ४ निषेधिका ५ अपृच्छ ६ प्रतिपृच्छ ७ छंदन ८ सन्निमंत्रण ९ उपसंपत १० ॥ ६५ ॥

सप्त परमस्थानानि ॥ ६६ ॥

अर्थ—परम स्थान सात हैं।

यथा-सज्जाति १ सद्गृहीत्व २ पारिव्राज्य ३ सुरेन्द्रता ४ साम्राज्य ५ परमार्हन्त्य ६ परिनिर्वाण ७ ॥ ६६ ॥

इति शास्त्रसारसमुच्चय भाषाटीकासह तृतीयोऽध्यायः।

षड्द्रव्याणि ॥ १ ॥

अर्थ-द्रव्य छैह हैं।

यथा-जीव द्रव्य १ अजीव (पुद्गल) द्रव्य २ धर्म-द्रव्य ३ अधर्मद्रव्य ४ आकाशद्रव्य ५ काल द्रव्य ६ ॥ १ ॥

पंचास्तिकायाः ॥ २ ॥

अर्थ-अस्तिकाय पांच हैं।

यथा—जीवास्तिकाय १ अजीवास्तिकाय २ धर्मास्तिकाय ३ अधर्मास्तिकाय ४ आकाशास्तिकाय ५ ॥ २ ॥

सप्त तत्त्वानि ॥ ३ ॥

अर्थ—तत्त्व सात हैं।

यथा—जीवतत्त्व १ अजीवतत्त्व २ आस्रवतत्त्व ३ बन्धतत्त्व ४ संवर तत्त्व ५ निर्जरातत्त्व ६ मोक्षतत्त्व ७ ॥३॥

नव पदार्थाः ॥ ४ ॥

अर्थ—पदार्थ नौ हैं।

यथा-तत्त्व ७ पुण्य १ पाप १ इसतरह नौ पदार्थ हैं।

चतुर्विधो न्यासः ॥ ५ ॥

अर्थ—न्यास (निक्षेप) चार प्रकार हैं।

यथा-नामनिक्षेप १ स्थापनानिक्षेप २ द्रव्यनिक्षेप ३ भावनिक्षेप ४ ॥ ५ ॥

द्विविधं प्रमाणम् ॥ ६ ॥

अर्थ-प्रमाण दो प्रकार हैं।

यथा-प्रत्यक्ष प्रमाण १ परोक्ष प्रमाण २ ॥ ६ ॥

पंच संज्ञानानि ॥ ७ ॥

अर्थ-ज्ञान पांच प्रकार हैं।

यथा-मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मनःपर्यय-ज्ञान ४ केवलज्ञान ५ ॥ ७ ॥

त्रीण्यज्ञानानि ॥ ८ ॥

अर्थ-अज्ञान (कुज्ञान) तीन हैं।

यथा-कुमतिज्ञान १ कुश्रुतज्ञान २ कुअवधिज्ञान ३ ॥८॥

मतिज्ञानं षट्त्रिंशदुत्तरत्रिशतभेदम् ॥ ९ ॥

अर्थ-मतिज्ञानके तीन सौ छत्तीस भेद होते हैं।

यथा-मतिज्ञान ४ प्रकार-अवग्रह १ ईहा २ अवाय ३ धारणा ४ । मतिज्ञान विषयक पदार्थ १२-बहु १ अल्प २ बहुविध ३ एकविध ४ क्षिप्र ५ अक्षिप्र ६ निःसृत ७ अनिः-सृत ८ उक्त ९ अनुक्त १० ध्रुव ११ अध्रुव १२ । यह पदार्थ व्यक्तरूप हैं जिसे अर्थावग्रह कहते हैं और यही पदार्थ अव्यक्तरूप हैं जिसे व्यंजनावग्रह कहते हैं। अर्थावग्रह-

काग्यान–पांचों इन्द्री और छठे मनसे होता है। व्यंजनाव-ग्रहकाग्यान—मन और नेत्रके सिवा चारों इन्द्रीसे होता है इस कारण अर्थावग्रहके भेद = ४×१२×६ = २८८ और व्यंजनावग्रहके भेद १×१२×४ = ४८ इसप्रकार २८८+४८ = ३३६ कुल भेद हैं।

द्विविधं श्रुतज्ञानम् ॥ १० ॥

अर्थ–श्रुतज्ञान दो प्रकार है।

यथा–अंगप्रविष्ट श्रुतज्ञान १ अंगबाह्य श्रुतज्ञान २।

द्वादशांगानि ॥ ११ ॥

अर्थ–अंगप्रविष्ट श्रुतज्ञानके बारह अंग हैं।

यथा–आचारांग १ सूत्रकृतांग २ स्थानांग ३ समवायांग ४ व्याख्याप्रज्ञप्त्यंग ५ ज्ञातृधर्मकथांग ६ उपासकाध्ययनांग ७ अंतःकृद्दशांग ८ अनुत्तरौपपादिकदशांग ९ प्रश्नव्याकरणांग १० विपाकसूत्रांग ११ दृष्टिप्रवादांग १२।

चतुर्दश प्रकीर्णकानि ॥ १२ ॥

अर्थ–अंगबाह्यश्रुतज्ञानके प्रकीर्णक चौदह हैं।

यथा–सामायिक प्रकीर्णक १ चतुर्विंशतिस्तवन प्रकीर्णक २ वन्दनाप्रकीर्णक ३ प्रतिक्रमण प्रकीर्णक ४ विनय प्रकीर्णक ५ कृतिकर्म प्रकीर्णक ६ दशवैकालिक प्रकीर्णक ७ उत्तराध्ययन प्रकीर्णक ८ कल्पव्यवहार प्रकीर्णक ९ कल्पाकल्प प्रकीर्णक १० महाकल्प प्रकीर्णक ११ पुण्डरीक

प्रकीर्णक १२ महापुण्डरीक प्रकीर्णक १३ निषिधिका प्रकीर्णक १४ ॥ १२ ॥

त्रिविधमवधिज्ञानम् ॥ १३ ॥

अर्थ—अवधिज्ञान तीन प्रकार है।

यथा—देशावधि १ परमावधि २ सर्वावधि ३ ॥ १३ ॥

द्विविधं मनःपर्ययज्ञानम् ॥ १४ ॥

अर्थ—मनःपर्ययज्ञान दो प्रकार है।

यथा—ऋजुमति मनःपर्ययज्ञान १ विपुलमति मनःपर्ययज्ञान २ ॥ १४ ॥

केवलमेकमसहायम् ॥ १५ ॥

अर्थ—केवलज्ञान एक प्रकार है और असहायक है।

यथा—केवलज्ञान एक, निर्विकल्पक और सकल प्रत्यक्ष है ॥ १५ ॥

नवनयाः ॥ १६ ॥

अर्थ—नय नौ हैं।

यथा—नैगमनय १ संग्रहनय २ व्यवहारनय ३ ऋजुसूत्र नय ४ शब्दनय ५ समभिरूढ़िनय ६ एवंभूतनय ७ द्रव्यार्थिकनय ८ पर्यायार्थिकनय ९ ॥ १६ ॥

सप्तभंगा इति ॥ १७ ॥

अर्थ—जिनवाणीके भंग सात हैं।

यथा—स्यादस्ति १ स्यान्नास्ति २ स्यादस्तिनास्ति ३ स्यादवक्तव्य ४ स्यादस्त्यवक्तव्य ५ स्यान्नास्त्यवक्तव्य ६ स्यादस्तिनास्त्यवक्तव्य ७ इसप्रकार ७ भंग हैं ॥ १७ ॥

पंचभावाः ॥ १८ ॥

अर्थ—जीवके निजी भाव पांच हैं।

यथा—औपशमिक भाव १ क्षायिक भाव २ क्षायोपशमिक (मिश्र) भाव ३ औदयिक भाव ४ पारिणामिक भाव ५ ॥ १८ ॥

औपशमिको द्विविधाः ॥ १९ ॥

अर्थ—उपशम भाव दो प्रकार है।

यथा—उपशम सम्यक्त्व १ उपशम चारित्र २ ॥१९॥

क्षायिकोनवविधः ॥ २० ॥

अर्थ—क्षायिक भाव नौ प्रकार है।

यथा—क्षायिक सम्यक्त्व १ क्षायिक चारित्र २ क्षायिक ज्ञान ३ क्षायिक दर्शन ४ क्षायिक दान ५ क्षायिक लाभ ६ क्षायिक भोग ७ क्षायिक भोग ८ क्षायिक वीर्य ९ ॥२०॥

अष्टादशविधः क्षायोपशमिकः ॥ २१ ॥

अर्थ—क्षायोपशमिक (मिश्र) भाव अठारह प्रकार है।

यथा—सुमतिज्ञान १ सुश्रुतज्ञान २ सुअवधिज्ञान ३ मनःपर्ययज्ञान ४ कुमतिज्ञान ५ कुश्रुतज्ञान ६ कुअवधि-

ज्ञान ७ चक्षुदर्शन ८ अचक्षुदर्शन ९ अवधिदर्शन १० दानलब्धि ११ लाभलब्धि १२ भोगलब्धि १३ उपभोग-लब्धि १४ वीर्यलब्धि १५ क्षयोपशम सम्यक्त्व १६ क्षयोप-शमचारित्र १७ संयमासंयम १८ ॥ २१ ॥

औदयिकमेकविंशतिविधम् ॥ २२ ॥

अर्थ—औदयिक भाव इक्कीस प्रकार है।

यथा—देवगति १ मनुष्यगति २ तिर्यंचगति ३ नरक गति ४ क्रोध ५ मान ६ माया ७ लोभ ८ स्त्रीवेद ९ पुरुषवेद १० नपुंसकवेद ११ मिथ्यादर्शन १२ अज्ञान १३ असंयम १४ असिद्धत्व १५ कृष्णलेश्या १६ नीललेश्या १७ कापोतलेश्या १८ पीतलेश्या १९ पद्मलेश्या २० शुक्ल-लेश्या २१, इसप्रकार औदयिक भावके २१ भेद हैं ॥२२॥

पारिणामिकं त्रिविधम् ॥ २३ ॥

अर्थ—पारिणामिक भाव तीन प्रकार है।

यथा—जीवत्व १ भव्यत्व २ अभव्यत्व ३ ॥ २३ ॥

गुणजीवमार्गणास्थानानि प्रत्येकं चतुर्दश ॥२४॥

अर्थ—गुणस्थान, जीवसमास, मार्गणा—यह हर एक चौदह चौदह हैं।

यथा—१४ गुणस्थान,—मिथ्यात्व १ सासादन २ सम्यग्मिथ्यात्व ३ असंयतसम्यग्दृष्टि ४ देशसंयत ५ प्रमत्त-संयत ६ अप्रमत्तसंयत ७ अपूर्वकरण ८ अनिवृत्तिकरण ९

सूक्ष्मसांपराय १० उपशांतकषाय ११ क्षीणकषाय १२ सयोगकेवली १३ अयोगकेवली १४ इसप्रकार गुणस्थान १४ हैं।

१४ जीवसमास—एकेंद्रियजीव बादर १ एकेंद्रियजीव सूक्ष्म २ द्वींद्रिय जीव ३ त्रींद्रिय जीव ४ चतुरिंद्रिय जीव ५ पंचेंद्रियजीव संज्ञी ६ पंचेंद्रियजीव असंज्ञी ७ यह सातों जीव पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे १४ प्रकार जीवसमास हैं।

१४ मार्गणा—गतिमार्गणा १ इंद्रियमार्गणा २ कायमार्गणा ३ योगमार्गणा ४ वेदमार्गणा ५ कषायमार्गणा ६ ज्ञानमार्गणा ७ संयममार्गणा ८ दर्शनमार्गणा ९ लेश्यामार्गणा १० भव्यत्वमार्गणा ११ सम्यक्त्वमार्गणा १२ संज्ञित्वमार्गणा १३ आहारकमार्गणा १४ इसप्रकार गुणस्थान, जीवसमास, मार्गणा १४–१४ हैं ॥ २४ ॥

षट् पर्याप्तयः ॥ २५ ॥

अर्थ–पर्याप्ति छह हैं।

यथा–आहार पर्याप्ति १ शरीर पर्याप्ति २ इंद्रिय पर्याप्ति ३ श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति ४ वचन पर्याप्ति ५ मनःपर्याप्ति ६।

दश प्राणाः ॥ २६ ॥

अर्थ–प्राण दश हैं।

यथा–५ इंद्रिय प्राण १ मनोबलप्राण १ वचनबलप्राण १

कायबलप्राण १ श्वासोच्छ्वासप्राण १ आयुप्राण, इसतरह प्राण दश हैं।

चतस्रः संज्ञाः ॥ २७ ॥

अर्थ–संज्ञा चार हैं।

यथा–आहार संज्ञा १ भयसंज्ञा २ मैथुनसंज्ञा ३ परिग्रहसंज्ञा ४ ॥ २७ ॥

द्विविधमेकेन्द्रियम् ॥ २८ ॥

अर्थ–एकेंद्रिय जीव दो प्रकार हैं।

यथा–एकेंद्रियजीवबादर १ एकेंद्रियजीवसूक्ष्म ॥२८॥

त्रीणि विकलेन्द्रियाणि ॥ २९ ॥

अर्थ–विकल इंद्रिय तीन हैं।

यथा–द्वींद्रिय जीव १ त्रींद्रिय जीव २ चतुरिंद्रिय जीव ३ इन जीवोंको विकलेंद्रिय जीव कहते हैं ॥ २९ ॥

पंचेन्द्रियं द्विविधम् ॥ ३० ॥

अर्थ–पंचेंद्रिय जीव दो प्रकार हैं।

यथा–पंचेंद्रियजीव संज्ञी १ पंचेंद्रियजीव असंज्ञी २ ॥

गतिश्चतुर्विधा ॥ ३१ ॥

अर्थ—गति चार प्रकार हैं।

यथा—देवगति १ मनुष्यगति २ तिर्यचगति ३ नरकगति ४ ॥ ३१ ॥

पंचेन्द्रियाणि ॥ ३२ ॥

अर्थ-इंद्रियां पांच हैं।

यथा-स्पर्शनेंद्रिय १ रसनेंद्रिय २ घ्राणेंद्रिय ३ नेत्रेंद्रिय ४ श्रोत्रेंद्रिय ५ ॥ ३२ ॥

षट् जीवनिकायाः ॥ ३३ ॥

अर्थ—जीवोंके छह समूह हैं।

यथा—पृथ्वीकाय १ जलकाय २ वायुकाय ३ अग्निकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६ ॥ ३३ ॥

त्रिविधो योगः ॥ ३४ ॥

अर्थ-योग तीन प्रकार हैं।

यथा-मनोयोग १ वचनयोग २ काययोग ३ ॥३४॥

पंचदशविधो वा ॥ ३५ ॥

अर्थ-योग पन्द्रह प्रकार भी हैं।

यथा-मनोयोग ४,-सत्यमनोयोग १ असत्यमनोयोग २ उभयमनोयोग ३ अनुभयमनोयोग ४ ।

वचनयोग ४,-सत्यवचनयोग १ असत्यवचनयोग २ उभयवचनयोग ३ अनुभयवचनयोग ४ ।

काययोग ७,--औदारिककाययोग १ औदारिकमिश्रकाययोग २ वैक्रियिककाययोग ३ वैक्रियिकमिश्रकाययोग ४

आहारककाययोग ५ आहारकमिश्रकाययोग ६ कार्माण-काययोग ७ इसप्रकार ४+४+७=१५ काययोग हैं ॥३५॥

नवविधो वा ॥ ३६ ॥

अर्थ—योग नौ प्रकार हैं।

यथा—मनोयोग १ वचनयोग २ काययोग ३, तीनों को कृत १ कारित २ अनुमोदना ३ से गुणा करनेपर ९ योग हो जाते हैं ॥ ३६ ॥

चत्वारः कषायाः ॥ ३७ ॥

अर्थ—कषाय चार प्रकार हैं।

यथा—क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ ॥ ३७ ॥

अष्टौ ज्ञानानि ॥ ३८ ॥

अर्थ—ज्ञान आठ प्रकारके हैं।

यथा—मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मनः-पर्ययज्ञान ४ केवलज्ञान ५ कुमतिज्ञान ६ कुश्रुतज्ञान ७ कुअवधिज्ञान ८ ॥ ३७ ॥

सप्त संयमाः ३९॥

अर्थ-संयम सात हैं।

यथा—सामायिक संयम १ छेदोपस्थापन संयम २ परिहारविशुद्धि संयम ३ सूक्ष्मसांपराय संयम ४ यथाख्यात-

चारित्र संयम ५ संयमासंयम ६ असंयम ७। इस प्रकार संयम सात हैं ॥ ३८ ॥

चत्वारि दर्शनानि ॥ ४० ॥

अर्थ-दर्शन चार प्रकार हैं।

यथा-चक्षुर्दर्शन १ अचक्षुर्दर्शन २ अवधिदर्शन ३ केवलदर्शन ४ ॥ ४० ॥

षट् लेश्याः ॥ ४१ ॥

अर्थ-लेश्या छह हैं।

यथा-कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ पीतलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शुक्ललेश्या ६ ॥ ४१ ॥

द्विविधं भव्यत्वम् ॥ ४२ ॥

अर्थ-भव्यत्व दो प्रकार है।

यथा-भव्यत्व १ अभव्यत्व २ ॥ ४२ ॥

षड्विधा सम्यक्त्वमार्गणा ॥ ४३ ॥

अर्थ-सम्यक्त्वमार्गणा छह प्रकार है।

यथा-उपशमसम्यक्त्व मार्गणा १ क्षयोपशमसम्यक्त्व मार्गणा २ क्षायिकसम्यक्त्व मार्गणा ३ मिथ्यात्वसम्यक्त्व मार्गणा ४ सासादनसम्यक्त्व मार्गणा ५ मिश्रसम्यक्त्व मार्गणा ६ ॥ ४३ ॥

द्विविधं संज्ञित्वम् ॥ ४४ ॥

अर्थ—संज्ञित्व मार्गणा दो प्रकार है।

यथा-संज्ञित्व १ असंज्ञित्व २ ॥ ४४ ॥

आहार्युपयोगश्चेति ॥ ४५ ॥

अर्थ—आहारक मार्गणा १ उपयोग मार्गणा २ इनमेंसे प्रत्येकके दो दो भेद हैं।

आहारकके २ भेद—आहारक १ अनाहारक २।

उपयोगके २ भेद—ज्ञानोपयोग १ दर्शनोपयोग २।

पुद्गलाकाशकालास्रवाश्च प्रत्येकं द्विविधम् ॥ ४६ ॥

अर्थ—पुद्गल, आकाश, काल और आस्रव, हर एक दो दो प्रकार हैं।

यथा—पुद्गल बादर १ पुद्गल सूक्ष्म २ इसप्रकार पुद्गल दो प्रकार है।

लोकाकाश १ अलोकाकाश २ इसतरह आकाश दो प्रकार है।

निश्चयकाल १ व्यवहारकाल २ इसप्रकार काल दो प्रकार है।

साम्परायिक आस्रव (भावास्रव) १ ईर्यापथ आस्रव (द्रव्यास्रव) २, इसप्रकार आस्रवके दो भेद हैं ॥ ४६ ॥

बंधहेतवः पंचविधाः ॥ ४७ ॥

अर्थ—बन्धके कारण पांच हैं ।

यथा—मिथ्यादर्शन १ अविरति २ प्रमाद ३ कषाय ४ योग ५ ॥ ४७ ॥

बन्धश्चतुर्विधः ॥ ४८ ॥

अर्थ—बन्ध चार प्रकार है ।

यथा—प्रकृतिबन्ध १ प्रदेशबन्ध २ स्थितिबन्ध ३ अनुभागबन्ध ४ ॥ ४८ ॥

अष्टौ कर्माणि ॥ ४९ ॥

अर्थ—कर्म आठ प्रकारे हैं ।

यथा—ज्ञानावरणीय कर्म १ दर्शनावरणीय कर्म २ वेदनीय कर्म ३ मोहनीय कर्म ४ आयु कर्म ५ नाम कर्म ६ गोत्र कर्म ७ अन्तराय कर्म ८ ॥ ४९ ॥

ज्ञानावरणीयं पंचविधम् ॥ ५० ॥

अर्थ—ज्ञानावरणीय कर्म पांच प्रकार है ।

यथा—मतिज्ञानावरण १ श्रुतज्ञानावरण २ अवधिज्ञानावरण ३ मनःपर्ययज्ञानावरण ४ केवलज्ञानावरण कर्म ५ ॥

दर्शनावरणीयं नवविधम् ॥ ५१ ॥

अर्थ—दर्शनावरणीय कर्म नौ प्रकार है ।

यथा—चक्षुदर्शनावरण १ अचक्षुदर्शनावरण २ अवधि-

दर्शनावरण ३ केवलदर्शनावरण ४ निद्रा ५ निद्रानिद्रा ६ प्रचला ७ प्रचलाप्रचला ८ स्त्यानगृद्धि ९ ॥ ५१ ॥

वेदनीयं द्विविधम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—वेदनीय कर्म दो प्रकार है।

यथा—सातावेदनीय कर्म १ असातावेदनीय कर्म २।

मोहिनीयमष्टाविंशतिविधम् ॥ ५३ ॥

अर्थ—मोहनीयकर्म अट्ठाईस प्रकार है।

यथा—१६ कषाय,—अनन्तानुबन्धी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४, प्रत्याख्यानावरणक्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४, संज्वलनक्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४, इसतरह १६। ९ नोकषाय,—हास्य १ रति २ अरति ३ शोक ४ भय ५ जुगुप्सा ६ पुरुषवेद ७ स्त्रीवेद ८ नपुंसकवेद ९ इसतरह ९, ३ मिथ्यात्व—सम्यक्त्वप्रकृति १ मिथ्यात्वप्रकृति २ सम्यक्मिथ्यात्वप्रकृति ३, इसतरह सब मिलकर १६+९+३=२८ भेद हैं ॥ ५३ ॥

आयुश्चतुर्विधम् ॥ ५४ ॥

अर्थ—आयु कर्म चार प्रकार है।

यथा—देवायु १ मनुष्यायु २ तिर्यंचायु ३ नरकायु ४॥

द्विचत्वारिंशद्विधं नाम ॥ ५५ ॥

अर्थ—नाम कर्म बियालीस प्रकार है।

यथा—गति १ जाति २ शरीर ३ बन्धन ४ संघात ५ संस्थान ६ आंगोपांग ७ संहनन ८ वर्ण ९ गन्ध १० रस ११ स्पर्श १२ आनुपूर्वी १३ अगुरुलघु १४ उपघात १५ परघात १६ स्वास १७ आतप १८ उद्योत १९ विहायोगति २० त्रस २१ स्थावर २२ वादर २३ सूक्ष्म २४ पर्याप्त २५ अपर्याप्ति २६ प्रत्येकशरीर २७ साधारण शरीर २८ स्थिर २९ अस्थिर ३० शुभ ३१ अशुभ ३२ सुभग ३३ दुर्भग ३४ सुस्वर ३५ दुस्वर ३६ आदेय ३७ अनादेय ३८ यशःकीर्ति ३९ अयशःकीर्ति ४० निर्माण ४१ तीर्थंकर ४२ इसतरह नामकर्म ४२ प्रकार है ॥ ५५ ॥

द्विविधं गोत्रम् ॥ ५६ ॥

अर्थ—गोत्रकर्म दो प्रकार है।

यथा—उच्चगोत्रकर्म १ नीचगोत्रकर्म २ ॥ ५६ ॥

पंचविधमन्तरायम् ॥ ५७ ॥

अर्थ—अंतराय कर्म पांच प्रकार है।

यथा—दानान्तराय कर्म १ भोगांतराय कर्म २ उपभोगान्तराय कर्म ३ लाभांतराय कर्म ४ वीर्यान्तराय कर्म ५।

पुण्यं द्विविधम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—पुण्य दो प्रकार है।

यथा—पुण्यानुबन्धी पुण्य १ पापानुबंधी पुण्य २

पापं च ॥ ५९ ॥

अर्थ–पाप दो प्रकार है ।

यथा–पुण्यानुबन्धी पाप १ पापानुबन्धी पाप २ ॥५९॥

संवरश्च ॥ ६० ॥

अर्थ—संवर दो प्रकार है ।

यथा–भाव संवर १ द्रव्यसंवर २ ॥ ६० ॥

एकादश निर्जरा ॥ ६१ ॥

अर्थ–निर्जराके स्थान ग्यारह हैं ।

यथा–सातिशयमिथ्यादृष्टि १ सम्यग्दृष्टि २ श्रावक ३ विरत (मुनि) ४ अनंतवियोजक ५ दर्शनमोहक्षपक ६ उपशमक ७ उपशांतमोह ८ क्षपक ९ क्षीणमोह १० जिन ११ इसतरह निर्जराके स्थान ११ हैं ॥ ६१ ॥

त्रिविधो मोक्षहेतुः ॥ ६२ ॥

अर्थ—मोक्षके हेतु तीन हैं ।

यथा—सम्यग्दर्शन १ सम्यग्ज्ञान २ सम्यक्चारित्र ३

द्विविधोमोक्षः ॥ ६३ ॥

अर्थ–मोक्ष दो प्रकार है ।

यथा–भावमोक्ष १ द्रव्यमोक्ष २ ॥ ६३ ॥

द्वादश सिद्धस्थानद्वाराणि ॥ ६४ ॥

अर्थ—सिद्धस्थानके बारह द्वार हैं ।

यथा—काल १ लिंग २ गति ३ क्षेत्र ४ तीर्थ ५ ज्ञान ६ अवगाहन ७ प्रतिबोध ८ चारित्र ९ संख्या १० अल्पबहुत्व ११ अंतर १२ ॥ ६४ ॥

अष्टौ सिद्धगुणाः ॥ ६५ ॥

अर्थ—सिद्ध भगवानके गुण आठ हैं।

यथा—अनन्तदर्शन १ अनन्तज्ञान २ अनन्तसुख ३ अनन्तवीर्य ४ सूक्ष्मत्व ५ अवगाहनत्व ६ अगुरुलघुत्व ७ अव्याबाधत्व ८ ॥ ६५ ॥

इति शास्त्रसारसमुच्चये भाषाटीकासहिते चतुर्थोऽध्यायः।

श्रीमाघनंदियोगीन्द्रः, सिद्धांताम्बुधिचन्द्रमाः।
अचीकरद्विचित्रार्थं, शास्त्रसारसमुच्चयम् ॥ १ ॥

सिद्धांतरूपी महासागरको बढानेके लिये चंद्रमाके समान श्रीमाघनन्दि मुनिराजने विचित्र वा अनेक प्रकार के अर्थोंसे भरे हुए इस शास्त्रसारसमुच्चय नामके ग्रन्थको बनाया।

समाप्तश्चायं ग्रंथः।